

नं० ५३८६ – पट्टीका
श्रीरामगीतामाहात्म्यम् (का०)
पत्राणि ६८ (सम्पूर्णम्)
(बालकाण्ड पर्यन्तम्)

रामायणे
नं० ५३८६ - ध अध्यात्म
श्रीरामगीता माहात्म्यम् (काव्यम्)
हिन्दीटीका सहितम्
पत्राणि ८ चे (सम्पूर्णम्)



रा॰
गी॰
१

ॐश्रीरामायनमः ननोजगन्मं
गल मंगलात्मना विधायरामा
यण कीर्तिमुत्तमां चचारपूर्वी
चरितं रघूत्तमो राजर्षिवर्यै रभि
सेवितं यथा १ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः अ
थरामगीताके अर्थकों
लिखतेहैं अथशब्द आ
रंभके अर्थमों औरमंग
लाचरणके अर्थमोंहै
श्रीभगवान् महादेवजी
जोहैं सो संसार समुद्रमों
मग्नभयेहुए जो मूढज
नहैं तिनकों परमपदकी
प्राप्तीवास्ते दयाकरकें श्री
रामजीका और लक्ष्मण
के संवादकरकें परमतत्व

का उपदेश करणेकों
पार्वतीप्रति कथासुना
वतेहैं हेपार्वती श्रीराम
जी जोहै सोकैसेहैं इस
जगतमों मनुष्योंके मं
गलसें लेकर् ब्रह्मलोक
के मंगलपर्यंत जेतेमं
गलहैं मंगलक्याकहि
ये आनंद तिनका समु
द्रकी न्याईमहानिधीजो
ब्रह्मानंदहै सोईहै स्वरू
पतिनका इसी अर्थकों
श्रुतीभी कहतीहै क्या
इसी ब्रह्मानंदके अंश
कों पाइकर्के संपूर्ण भू
त आनंदकों भोगतेहैं

रा॰
गी॰
२

जेतेकछु त्रिलोकीमों भो
गसुखहैं सोसभही ब्र
ह्मानंदके अंशमात्रहैं
औरश्रुतीमोंभी एहीअ
र्थ कहाहै क्या भगवान्
जीका स्वरूपजोहै सोमं
गलोंकोंभी मंगलकरणे
हाराहै बहुड कैसेहैं श्री
रामजी रघुराजाके वंश
मों श्रीभगवान्जीका
अवतार स्वरूपकरकें म
हाउत्तम गुणोंकरकें उत्त
मकहैं सोरामजी रामाय
णरूपी जो अपनीकीर्त्ति
है सोकेसीहै श्रवण प
ठन कीर्त्तन स्मरण कर

णेहारेऊँकों पवित्रकरणे
हारीहै इसे उत्तमहै औरश
वणादिकोंके बधकर्के
प्रसिद्ध प्रगटभईहै जिस
कों जगतमों विस्तारकर्के
अयोध्यापुरीमों राजसिं
हासनमों बैठकर्के प्रजा
कों पालन कर्तेहुए लो
कापवादके भयतें अप
नीकीर्तिवास्ते सीताकोंप
रित्यागकर्के अपनेवंशमों
भयेजो पूर्वलेराजेहैं उ
नका जोआचारहै प्रजा
पालन दानधर्मादिक ति
सकों करतेभये सो आचा
र केवल अपने पूर्वले

रा॰
गी॰
टी॰
३

राजेओंनेही नहींकियाहै
किंतु औरजो राजेहैं ययाति
नहुषादिक राजऋषीति
नोंनेभी कियाहै २ ॥

3

सौमित्रिणा पृष्टउदारबुद्धिना रा
मःकथाःप्राह पुरातनीःशुभाः रा
ज्ञःप्रमत्तस्यनृगस्यशापतोद्विज
स्यतिर्यक्त्वमथाहराघवः २ ॥

उदारहै गुरुवाक्यमों वेद
वाक्यमों विश्वासवाली
और दानधर्ममों श्रद्धाबा
लीहै बुद्धि जिसकी ऐसे
लक्ष्मणने पूछेहुए श्रीरा
मजी जोहैं सोपुराणराजों
कियां जोधर्म अधर्मके नि
र्णयवालियां कथांहै ति

नकों लक्ष्मणके प्रति क
हतेभये फुनिकथाप्रसंग
में राजान्टगकी कथाको
कहतेभए कैसाहै राजा
न्टग राजमदकरके मस्त
भयाहै सोकैसाहै राजान्ट
ग सूर्यवंशमो राजाहोत
भया सोनित्यप्रतिएक ए
कहजार गौब्राह्मणोंको
देताभया इसप्रकार करके
एकदिनमों किसी ब्राह्म
णकी एकगऊ राजाकी
गऊंकेसाथ मिलजाती
भई सोगऊराजाने हजा
र गऊके साथ और ब्राह्म
णको दीनी उसगऊका

रा॰
गी॰
टी॰
४

मालक जो ब्राह्मणथा उस
कों राजानेबहुत मानश्रार्थ
ना करी तोभी उसनेराजाकों
शापदिया उसशापककें
राजानृग अनेकहजार वर्ष
पर्यंत ककलास योनीकों
प्राप्तहोताभया इसप्रकार
करकें राजानृगनें अज्ञान
करकें ब्राह्मणका धन हरणे
करकेंनीचयोनी पाईहै तिसें
राजाने धर्ममर्यादाककें सा
वधान होइ करकें राजकार्य
करणेनहीं तोराजासें प्रमा
दकरकें पापहोताहै तिसें
राज्यांतेनरकंध्रुवं नरक
कीप्राप्तीहोतीहै २ ॥

कदाचिदेकांत उपस्थितं प्रभुं रामं र
मालालित पादपंकजम् सौमित्रि
रामादित शुद्धभावनः प्रणम्यभक्त्या
विनयान्वितो ब्रवीत् ३ ॥

कदाचित कहा किसीसमय
में एकांतमें बैठेहुए श्री
रामजीको लक्ष्मणजोहैं सो
नम्रभयाहुआ अधीन भयाहु
आ यहरामजी मेरे बडेभाई
हैं औरराजाहैं औरउत्तम गु
णोंवालेहैं और धर्ममर्यादा
कों पालनेहारेहैं औरशास्त्रों
कों जाननेहारेहैं ऐसेश्रीरा
मजीकों अपने गुरुजानक
कें भक्तीककें प्रणामककें
वचनकों कहताभया इसक
कें लक्ष्मणकी गुरुसेवाक

रा·
गी·टी
५

हीहै सोमुमुक्षु पुरुषको प्र
थमसाधनकह्याहै कैसाहै
लक्ष्मण श्रीरामजीके मुखसें
उत्तम कथा श्रवणकरके प्र
सन्नभयाहै अंतःकरण जिस
का इस करके अंतःकरणकी
शुद्धताकहीहै जिसका अंतः
करण शुद्धहोवे उसको उ
पदेशकरणा सफलहोता
है कैसेहै रामजी सीताके
परित्याग करणे करके भी
अपनेवैभव प्रभावकी ल
क्ष्मीकरके जिनकेचरणारवि
द सदाशोभायमान भयेहै
अपनेचरणारबिंदकी सेवा
करके सर्वप्रकारकी संपदा

कों देनेहारे हैं ३ ॥

त्वंशुद्ध बोधोसिहि सर्वदेहिना मा
त्मास्यधीशोसि निराकृतिः स्वयम्
प्रतीयसेज्ञानदृशांमहामते पदाब्ज
संगाहितसंगसंगिनाम् ४ ॥

लक्ष्मणउवाच हेमहामते तु
म्हारी बुद्धिजोहै सोसर्व प्रा
णीओंको और सर्वधर्मोंको जा
ननेहारीहै औरबंधमोक्षके
उपायकों भी जाननेहारीहै
तुमकैसेहो शुद्धबोधहो शु
द्धचैतन्यस्वरूपहो और सर्व
मनोंके आत्माहो संपूर्ण
जीवतुम्हारे प्रतिबिंबकी
न्याई अंशरूपहो औसर्वम
नोंके ईश्वरहो अंतर्यामी

गी॰ गी॰ टी॰ ६

6

इपकर्के सभकों प्रेरणाक
रणेहारेहो तुम्हारेमों भेद
कछुभीनहींहै जोकछुभेद
भासताहै सोमायाकी उपा
धीकर्के भासताहै इसीते
तुमप्रेरकहो सर्वमन तुम्हा
रीप्रेरणामोहैं वास्तवविचा
रतें तुम्हारेमों भेदकछुभी
नहींहै बहुडकैसेहो निरा
कारहो हमलोकोंके स
मानकर्मबंधनवालेस्वरू
पतें रहितहो जोतुमपमी
श्राशंका करो जोहम प
से निराकार एकब्रसंगरू
पहैं तोसमझो लोक हम
को इसप्रकारकर्के कौन

ही जानतेहैं इसका उत्तर
कहतेहैं हेप्रभोज्ञानदृष्टी
वाले पुरुषोंको आपइस
प्रकारके प्रतीतहोतेहो
सोज्ञानदृष्टी क्याहै जानी
ताहै तत्वरूप जिसकर्के
सोकहीएज्ञान सोक्याहै
वेदांतवाकोंका अर्थ ति
सकर्केजानना सोईहै त
त्वदर्शनका साधनजिन
कों सोकैसेहैं ज्ञानदृष्टी
वाले पुरुष तुम्हारे चरण
र बिंदोंमों भ्रमरोंकीन्याई
कियाहै प्रसंग जिसने
एसेअंतःकरणवालेहैं अ
र्थयहहै कातुम्हारे चर

रा॰
गी॰
टी॰
५

णकमलोंमों सदैवलगा
हुआहै अंतःकरण जिन
का एसेजोतुम्हारी एका
ग्र भक्तिवालेहैं तिनकों
ही तुम्हारेस्वरूपका तत्व
ज्ञानहोताहै अबलक्ष्मण
जी उपदेशकी प्रार्थना
कों करतेहैं ४ ॥

अहंप्रपन्नोस्मि पदांबुजं प्रभो
भवापवर्गंतवयोगिभावितम्
यथांजसा ज्ञान मपारवारिधिं
सुखंतरिष्यामि तथानुशाधिमा
म् ५ ॥

हेप्रभो मेंतुम्हारे चरणार
विंदकी शरणप्राप्तभया
हों कैसाहै तुमारा चरणा
रविंद जिसनें संसारके

दुःखका अंतह्योताहै और मुक्तीह्योताहै इसीते योगी जनोंने संसारतें मुक्तह्योनेके निमित्त सदैवध्याया ह्नआहै इसकर्के लक्ष्मणजीने सतपुरुषोंके संप्रदायका आचारका प्रमाणकर्‍याहै अब प्रयोजनकी प्रार्थनाकों करनेहैं हेप्रभुजी समुद्रकी न्याई दुस्तरहै ऐसा जो प्रज्ञानहै सो कैसाहै संसारकामूलकारणहैं जिसकों नाश कर्केंलेआविना जिस प्रकार कर्कें मैंनरजावों तैसे मेरेकों कृपाकर्कें

रागी
टी॰
८

श्लोकरो ५ ॥

श्रुत्वाथ सौमित्रि वचोखिलंतदा
प्राह प्रपन्नार्ति हरःप्रसन्नधीः
विज्ञान मज्ञान तमोप शांतये
श्रुतिप्रपन्नं क्षितिपाल भूषणम्
८ ॥

श्रीमहादेवउवाच हेपार्व
ती रामजी जोहैं सोकैसे
हैं भक्तोंकी वेनती सुन
करके ततक्षणही भक्तों
की पीडाको संसारके दुः
खकों हरणेहारेहैं और
संशयके भ्रमतें रहितहै
भक्तोंके उपरकृपा करणे
मों सावधानहै बुद्धिजिन
की बहुडकैसेहैं क्षितिपा
लजोहैं राजालोक तिनके

भूषणहै शिरोमणीहै च
क्रवर्तीहै संसारचक्रके प्र
वर्तकहैं प्रेरकहै बंधमो
क्षके कर्ताहै सो रामजी
लक्ष्मणके इस प्रकारके
वचनकों श्रवण करकें
संसारका मूलजो अज्ञान
रूपी अंधकार तिसकी
शांतिके वास्ते तिसआत्म
तत्वकों जानकर्के पुरुष
जोहै सो प्रति सत्त्वकोंप्रा
प्तहोताहै जिसकों पाइक
के बहुड नंही मरताहै
मुक्तहोजाताहै इत्यादिक
श्रुतीयोंकर्के प्रमाणवा
ला ऐसाजोविज्ञानहै सो

रा
गी॰
टी॰
५

त्मतत्वका ज्ञानतिसकों लक्ष्मणके प्रतिसामान्यक रिकें कहतेभये ६ ॥

आदौस्ववर्णाश्रम वर्णिताःक्रियाः कृत्वा समासादित शुद्धमानसः समाप्यतत्पूर्व मुपात्त साधनः स माश्रयेत्सद्गुरु मात्म लब्धये ७ ॥

हेपार्वती तिसप्रकारके ज्ञानकी प्राप्तिकेनिमित्त तिसके बाह्यसाधनोंकों और अंतरीय साधनोंकों श्रीरामजी प्रथमकहतेहैं श्रीराम उवाच हेलक्ष्मण मोक्षकों चाहता जो पुरुषहैं सो प्रथमतो अपने वर्णाश्रमों विषें करणेयोग्य जो

नित्य नैमित्तिक क्रियाहै
यज्ञदानादिक तिनको नि
ष्काम होइ करके करे तिसके
अनंतर चित्तशुद्धिको पाइ
करके तदनंतर सिद्धकियेहैं
शमदमादिक जिसने इस
करके यह सिद्धभयाहै नि
ष्कामकर्म जोहै सो बाह्यसा
धनहैं और शमदमादिक
अंतरीय साधनहै इनकरके
क्यासिद्ध होताहै जबलग
शमदमादिक सिद्ध नहीं
भये तबलग उनकी सिद्धी
वास्ते निष्काम कर्म करणे
योग्यहैं शमदमादिक सिद्ध
भयेतो कर्मकरणेकी समा

रा॰
गी॰
टी॰
१

सिकरे अर्थात् संन्यासकों
ग्रहणकरे आत्मज्ञानकी प्रा
सिवास्ते तत्वमस्यादि महा
वाक्यके अर्थकों विचारणे
वाले ब्रह्मनिष्ठ सत्‌गुरुकी
सेवाकरे एसा कहनेकरके
यह सूचन कियाहै जो अप
नी बुद्धिकरके महावाक्यके
अर्थकों विचारेतो मोक्षसि
द्धी नहींहोतीहै इसे गुरुसे
वा अवश्यकरणेयोग्यहै ७

क्रिया शारीरोद्भव हेतुराहृता प्रिया
प्रियौ तौ भवतःसुरागिणः धर्मेतरौ
तत्रपुनः शारीरकं पुनः क्रियाश्चक्र
वदीर्यते भवः ८ ॥

हे लक्ष्मण यहसंसार जोहै

सोसदा भ्रमणेहारे कलाल
के चक्रकीन्याई मायाकर्के
भ्रमताहीरहताहै तिसका
मूल कारण अज्ञानहै तिस
संसारकी निवृत्तिका मूलका
रण अज्ञानकी निवृत्तिहै औ
र अज्ञानकी निवृत्तिजोहै
सोकेवल एक तत्वज्ञान क
र्के सिद्धहोतीहै औरतत्वज्ञा
न जोहै सो वेदांतशास्त्रके
विचारकर्के सिद्धहोताहै
तिसके निमित्त सतगुरुसे
वाकरणेयोग्यहै इसी ग्रंथ
कों क्रमकरके प्रगटकरते
हैं हेलक्ष्मण संसार जोहैसो
चक्रके भ्रमणेकीन्याई भ्रम

ग॰
गी॰
टी॰
११

ताहुआ कहीताहै इसी ग्रंथ
कों सिद्धकरतेहैं पूर्वले ज
न्ममों ग्रथवा इसजन्ममों भो
गवासना करकें ग्रादरपूर्वक
करीहुई जो क्रियाहै कर्मको
इ सोई शरीरकी उत्पत्तिका
कारणहैं तिसजन्ममों विष
योंकी ग्रभिलाषावाले पुरु
षकों सोजो शास्त्रमों प्रसिद्ध
कहेहुए जो धर्म ग्रोर ग्रधर्म
जोहै सो सुखभोगनेकी बु
द्धिकरकें प्रियग्रोर ग्रप्रियहो
तेहैं किसीप्राणीकों ग्रधर्म
मोंही सुखसाधनेकी बुद्धि
करकें प्रवृत्तिहोतीहै तिनध
र्मोंयर्मों करकें कबही ग्रयो

गती होतीहै कबही ऊर्ध्वग
ती होतीहै भोगवासना क
कै कर्मोंकी प्रवृत्ति करके
भोगवासना उदेहोतीहै क
र्मोंकरकै शरीर उत्पनहोता
है जैसेरथकाचक्र जोहैसो
उपरका नीचेहोताहै नीचे
काऊपरहोताहै तैसेही य
हसंसार चक्रभीभ्रमताहै
अर्थइहहै इस संसारसों ज
न्ममरणादिक जोहै सोधर्म
करणहारेकों अधर्मकरण
हारेकों एकसमानहीहै इ
सीकारणतें संसारतें मु
क्तिहोनेके निमित्त गुरुसेवा
अवश्यकरणेयोग्यहै ८

अज्ञान मेवास्यहि मूलकारणं तद्ज्ञा
नमेवात्र विधौ विधीयते विद्यैव तन्ना
श विधौ पटीयसी नकर्मतज्जं स
विरोध मीरितम् ५ ॥

हे लक्ष्मण तिस संसार का मू
ल अज्ञान ही है तिस्से इस सं
सार की निवृत्ति के विधी मों
करणे योग्य अर्थ मों तिस
संसार का मूल जो अज्ञान है
तिस की हान जो है त्यागना
सो ही साधन ना कर्के विधा
न करणे योग्य है अर्थ यह
है संसार की निवृत्ति वास्ते
अज्ञान को ही निवृत्ति कर
णे योग्य है इहां कोई वा
दी आशंका करे जो संसार
की निवृत्ति करणे कों क

सेही साधन होवे ज्ञानकर्के
क्याप्रयोजन है इसका उत्त
र कहते हैं जिस संसारका
मूलजो अज्ञान है जिसकेना
श करणे के विधानमों वि
याजोज्ञान है सो ईसमर्थ है
कर्मसमर्थनहीं है सो अज्ञा
नसे भया है आत्माके स्वरू
पके अज्ञानतें भया है देह
इंद्रियादिकोंके अभिमानसें
उपजया है इस्से अज्ञानसेही
कर्महोता है सोउसको ना
शनहीं करता है इहांकोई
आशंकाकरे जो जिसतें उ
त्पतहोता है सोभीकहीं क
हीं अपनी उत्पति करणे

ग.
गी.
टी.
१३

13

हारेको नाशकरनाही देषा
है जैसें हृश्चिक और कर्कटी
आदिक जो जीवहैं सो उत्पं
न होनेही अपनी उत्पन्न क
रणे हारेके नाशको करते
देषेहैं तिस्से कर्महीं अज्ञान
के नाशको करे ज्ञानकाक्या
प्रयोजनहै इसका उत्तर क
हतेहैं इसको अपनी उत्प
त्तिके नाशकरणेका प्रयोज
न नहींहै किंतु योविरोध क
रणेहाराहै सोनाशकरता
है जैसें अंधकारका तेजके
साथ विरोधहै सो तेज अं
धकारके नाशको करताहै
तैसेंहीज्ञानभी अज्ञानका

विरोधीहै सोग्रज्ञानके ना
शकरणेमें समर्थहै ९।

नाज्ञान हानि र्नच रागसंक्षयो भवे
त्ततः कर्म सदोष मुद्भवेत् ततः
पुनः संसृति रप्य वारिता तस्माद्बु
धोज्ञान विचारवान्भवेत् ९ ॥

हेलक्ष्मण इसकारणतें
कर्म करके ग्रज्ञानकी हा
नी नहींहोतीहै ग्रौरतिस
ग्रज्ञानके सहायकों करणे
हारे रागकाभीक्षय नहीं हो
ताहै तिसकर्मके करणेतें
ग्रपनेफलके क्षयके दोष
वाला कर्मही प्रकटहोताहै
तिसकर्मतें पुनःसंसारही
प्रकटहोताहै सोकर्मकर्के

गी॰
टी॰
२४

निहत्त नहीं होता है और मुक्त की आशा भी कर्मते नहीं करणी तिस्तें विवेकी पुरुष जो है सो तत्त्वज्ञान के विचार वाला होवै वेदांतवाक्यों के विचार कों करे ९ ॥

ननु क्रिया वेद मुखेन चोदिता यथैव विद्या पुरुषार्थ साधनम् कर्तव्यता प्राण भृतः प्रचोदिता विद्यासहायत्व मुपैति सापुनः ११ ॥

तत्त्वज्ञान कोंही मोक्ष की कारणता कों कहनेकों ज्ञान के और कर्म के समुच्चय के वाद कों हटाण करणे वास्ते कहते हैं हे लक्ष्मण इहां स मुच्चय वादी का प्रश्न है समुच्चय वादी कर्म करके और

ज्ञानकर्के दोनोंकर्के मोक्ष
की सिद्धिकों कहताहै उ
सकायह प्रश्नहै क्यातुम
केवलज्ञानकर्के मुक्तिकों
कहतेहो जिस वेदके स्मृ
तिस्मृति पुराण लक्षणवा
ले प्रमाणकर्के ज्ञानकों
मोक्षका साधन कहतेहो
क्या ब्रह्मवेत्ता पुरुषजोहै
सो परमपदकों प्राप्तहोता
है इसश्रुति कर्के जैसें तुम
ज्ञानकों मोक्षका साधन
कहतेहो तैसेंहम कर्मकों
भी मोक्षका साधन कह
तेहै दोनोंकर्के मोक्षहोता
है इसकाप्रमाण दृष्टांत

गी॰
टी॰
१५

सहित कहतेहैं जैसें आका
शमों पंछीयोंकी गतीदोनों
पंखों करकें होतीहै तैसेही
ज्ञानकर्म करके इनदोनों
करकें सदा एकरसजो ब्रह्म
पदहै सोबीपाईताहै इत्या
दि शास्त्रप्रमाणों करकें कर्म
भी मोक्षकासाधन कत्थाहै
तिसें क्रियाजोहै सो अवश्य
मेव कर्तव्यता करकेंकहीहै
तिसें नित्यनैमित्तिक सेक्ष
णी क्रियाकों नहींकरेतो दो
षकीप्राप्ति करकें तत्वज्ञान
की उत्पत्ती भी नहीं होवेगी
तिसें सोक्रियाजोहै सो नि
ष्काम कर्मकरणे करकें ज्ञा

नके सहायको करतीहै
जैसे घटके रचन करणेमो
दंडओरचक्रादिकोंकी पर
स्पर सहायता बनीहै तैसे
मोक्षकी प्राप्तिमो ज्ञानक
र्मकी दोनोंकी परस्पर स
हायकारिता बनीहै तसके
वल ज्ञानको मोक्षकोसाध
नकों कैसे कहतेहो ११ ॥

कर्माकृतौ दोषमपि क्षतिर्जगौतस्मा
त्सदा कार्यमिदं मुमुक्षुणा ननु स्वतं
त्रा ध्रुवकार्यकारिणी विद्या न किं
चित् मनसाप्यपेक्षते १२ ॥

और कर्मके नहीं करणे मों
क्षती जो है सो दोषको भीक
हतीहै उसक्षतीका यह

ग॰ गी॰ टी॰ १९

अर्थहै क्या जो कोई पुरुष
देवतागणोंको तृप्त करणे
हारे अग्निकार्यको यज्ञ हो
मादिकको त्यागकरताहै
तिस पापकरके वीरहत्या
के दोषको प्राप्तहोताहै ति
सेंजबलग पुरुष जीवता
है तबलग अग्निहोत्रको
करताही रहे इसे कर्मका
परित्यागनहीं करणा
इसकरके समुच्चय पक्षही
सिद्ध भया इसमों अबसिद्धा
ती शंकाको उठाइकर्के के
बल ज्ञानके पक्षको सिद्ध
करताहै क्याक्रमको यही
समुच्चयपक्ष प्रमाणहै प

रंत हमारे पक्षमों यही नि
श्चयहै क्या विद्याजोहै ज्ञान
सो अब कार्यकों स्थिरका
र्य जोहै मोक्षतिसकों कर
णेहारी है सो स्वतंत्रहै धर्मा
दिकोंके सहाय विनाभी अ
पनेकार्यकों मोक्षकरणे मों
समर्थहै ग्रंथकारके निहति
करणेमों तेजकीन्याई मन
कर्के भी किसी और वस्तुके
सहायकों नहीं चाहती है
इसकों मोक्षफल के सिद्ध
करणेमों और कर्मादिकस
हायकी मनमोंभी कल्पना
नहीकरणी इसमों अनुमा
नकों प्रमाण करतेहैं विद्या

ग॰
गी॰
टी॰
१२

17

जोहै ज्ञान सो मोक्षफलके
साधनेमों निरपेक्षहै किसी
के सहायकों नहीचाहतीहै
किसें अपनीस्वस्वतंत्रतानें
इसमों दृष्टांतहै जैसी ग्रंथ
कारकीनि हतिमों तेजजो
है सो स्वतंत्रहै १२ ॥

नसत्यकार्योपिहि यद्वद ध्वरः स्व
कोक्षतेऽन्यानपि कारकादिकान्
तथैव विद्या विधितः प्रकाशितै र्वि
शिष्यते कर्मभिरेव मुक्तये १३ ॥

अब इसपक्षकों समुच्चयवा
दी शंका परिहार करताहै
जो तमने कहाहै सो हम
नही मानतेहैं सोकैसें जैसे
यज्ञजोहै सोभी सत्यकार्य

कों अत्यन्ताकों करणे हा
राहै इसमों फलका अर्थ
प्रमाणहै क्या चातुर्मास्य
यागकरणे हारेकों पुण्य
काफल अक्षय स्वर्ग सुख
होताहै सो कैसाहै स्वर्गसु
ख जोंनसा सुख दुःखके
लेशनें रहितहोवे अंतका
लसें रहितहोवे नाशरहि
त होवे और अपनी अभि
लाषा करके प्राप्तहोवे सो अ
क्षय स्वर्ग सुख कह्याहै
सो कर्म करके प्राप्तहोता
है सोभी जैसे देशकाल
वस्तु सामग्री और बहुत पु
रुषोंकी सहायकों चाहता

गी॰ टी॰ १८

18

है तैसेही विद्याजो ज्ञान सो
भी वेद वाक्यों करके कहेहु
ए अग्निहोत्रादिक कर्मों क
रकेही मुक्तिके निमित्त विशे
षफल वालीहोतीहै मोक्ष
फलदेनेमों कर्मोंके सहाय
कों चाहतीहै १३ ॥

केचिद्वदंतीति वितर्क वादिन स्तद
प्प सदृष्ट विरोध कारणात् देहाभि
माना दभिवर्धते क्रिया विद्यागताहं
कृतिः प्रसिध्यति १४ ॥

हे लक्ष्मण सिद्धांती जोहै सो
तिस समुच्चय पक्षको अना
दरकरके हणण करताहै
विरुद्ध तर्कके वादकरणे
हारे जोकोई अपनी कल्प

ना करके कहतेहैं सोभी अ
सत्यहै सोक्याकहतेहैं के
नेकहतेहैं ज्ञानका और क
र्मका समुच्चय जोहै परस्प
र संबंध तिसको मुक्तिका
साधनकहतेहै सो असत्य
है कैसे जैसे केवल कर्महो
मोक्षका साधनहै यहपक्ष
असत्यहै तैसे समुच्चय प
क्षभी असत्यहै सोकिसें स
र्व लोकमों दृष्ट आवता
जो प्रत्यक्ष विरोधहै तिसें
तिस विरोधके कारणको
प्रगट कहतेहैं क्रियाजोहै
कर्म सो देहाभिमानतें ब
नतीहै और विद्याजोहै ज्ञा

गी॰ टी॰ १५

न सो नष्टभयाहै अहंकार जिसको पसे पुरुषको प्रसिद्ध प्रगटहोतीहै अर्थयह है कर्ममों औरज्ञानमों अहंकारकी सत्ता और असत्ताही कारणहै इसविरोधतें समुच्चय पत्तविरोध बालाहै सो प्रमाण नहीकरणा ५ ।

विशुद्ध विज्ञान विरोचनो विना वि द्यात्म हृन्निश्चर मेति भएपने उदेति कर्मोखिल कारका दिभि र्निहंतिवि द्याखिलकारका दिकम् १५ ॥

अब समुच्च पत्तको दृषण करतेहैं और ज्ञानके स्वरूपको कहतेहैं हेलक्ष्मण ज्ञानकावक्तहै जिसके

स्वरूप कों श्रवण करो वि

शेषकर्कै शुद्ध होताहै ज्ञा

नजिनोंते पसेजो वेदांत

वाकाहैं तिनके अर्थकाजो

विचारहै तिसकर्कै प्रगटभ

ई हुईजो आत्महत्तिहै बला

कार अंतःकरणकी हत्ति सो

ही पंडित जनोंने विद्या क

हीहै अब फेर समुच्चय पक्ष

कों हर करणे वास्ते ज्ञानकी

औेर कर्मकी विषमताकों क

हतेहैं कर्मजोहै यज्ञादिक

सो संपूर्ण कर्ता और साध

न सामग्री और प्रकर्षोका

सहाय इस संपूर्ण अंगोंक

र्कै संपन्न होवेतो अपनाफ

ए॰
गी॰
टी॰
२॰

१०

ल देनेको समर्थ होताहै औ
र विद्याजोहै ज्ञान सो संपू
र्ण कर्ता कर्मादिक साधन
सामग्रीके नाशकों कर्तीहै
अर्थयहहै का संपूर्ण क
र्मव्यापारको त्यागकर्के स
र्ववेदोंकी परब्रह्ममों समा
प्ति जोहै सोही ब्रह्मविद्याहै
इसकारणतें सोतो स्वतः
सिद्धवर्तीहै केवल चित्तशु
द्धीके निमित्त निष्काम कर्म
करणेमों अपेक्षावालीहै
और अपना फलजोहै मोक्ष
तिसकों सिद्धकरणेमों नि
रपेक्षहै स्वतंत्रहै ९५ ॥

तस्मा त्यजेत्कार्य मशेषतः सुधी र्विद्या

विरोधान्नसमुच्चयो भवेत् स्मात्त संधान परायणः सदा निहत्त सर्वे द्रिय हत्ति गोचरः १९ ॥

अब पूर्वकरेहुए ग्रंथको समाप्ति करतेहैं औरमुमुक्षु पुरुषकी हत्तिको कहतेहैं हेलक्ष्मण जिसकारणतें ज्ञानका कर्मकेसाथ विरो धहै इसेज्ञान कर्मका समु च्चयनहीं बनताहै तिसीका रणतें मुमुक्षु पुरुष जोहै सो संपूर्ण कर्मको त्यागदे वे कामनावाले कर्मोंकोतो सर्वप्रकार करकेत्यागदेवे और नित्यनैमित्तिक वर्णा श्रमके कर्मोंकोचित्तकी शु द्धीपर्यंत करतारहै चित्त

शुद्धी भई तो वर्णाश्रमके
कर्मकोंभी अवश्य करणा
नही जाने सर्वत्याग करे फे
रक्या करे निवृत्त भई इंद्रि
योंकी शब्दादिक विषयों
से वृत्तियो जिस कियो ऐसा
होइ करके सच्चिदानंद स्वरू
प जो आत्मा है तिसकी प्रा
प्तिमें सावधान रहे तिसकी
प्राप्तिवास्ते प्राणायाम ध्यान
धारणादिकमें तत्पर होवे
१८ ॥

यावच्छरीरादिषु माययात्मधी स्ताव
द्विधेयो विधि वाद कर्मणां नेतीति
वाक्यै रखिलं निषिध्य तत् ज्ञात्वाप
रात्मा नमथ त्यजेत्क्रियाः १९ ॥

अब देहादिकोंमें रागवाले

जो पुरुषहैं औरवैराग्यवा
ले जो पुरुषहैं तिनके भेद
करकें कर्मोकी कर्त्तव्यताकों
औरनहीं कर्त्तव्यताकों क्रम
करकें कहतेहैं हेलक्ष्मण मा
याजो अविद्या तिसकरकें अ
नात्मभूत जोहैं देहादिक
तिनमें अहंकर्त्ता अहं भो
क्ता इस प्रकारकी आत्मबु
द्धि जबलग बनीहै तबल
ग वेदविधी करकें कहे हुए
जो यज्ञ याज्ञादिक कर्महैं
तिनकों करणेहारा बने जि
सकालमें देहादिकोंसे आ
त्म बुद्धिनिहत्त भई तबने
ति नेति इत्यादि वेदांत वा

ग॰
गी॰
टी॰
२२

कौंकर्के संपूर्ण जगतकों असत्य जानकर्के देहादिकों का निषेधकर्के निसें विल क्षणता कर्के सदासत्य रूप एसे परमात्माके स्वरूपकों ज्ञानकर्के संपूर्ण क्रियाकों त्यागदेवे ९ ॥

यदा परात्मात्म विभेद भेदकं विज्ञा न मात्म न्यव भातिभा स्वरम् तदेव माया प्रविलीयतेंजसा सकारका का रण मात्म संसृतेः १८ ॥

आत्मज्ञान जब भया तब अविद्या अवश्यमेव नष्टहो जाती है इसी अर्थकों प्रग ट कहतेहैं जबइस पुरुष के शुद्ध अंतःकरणमों प रमात्माजो ईश्वर और आ

त्मा जोजीव तिनको माया
अविद्या रूपी दो उपाधी क
कै दोप्रकारके भेदको कर
णेहारा जो अज्ञानहै तिसको
भेदनेहारा क्या नाशकरणेहा
रा और शुद्धजो तत्वहै आत्म
तत्व तिसको प्रकाश करणे
हारा ऐसा जो विज्ञानहै ब्र
ह्माकार अखंड वृत्ति जबभा
सतीहै आत्मनहीहै ऐसीजो
असंभावनाहै और देहेंद्रिया
दिकही आत्माहै इसप्रका
रकी विपरीत भावना होती
है और संशयादिक जोहै
तिनको हरकरके जबब्रह्मा
कार अखंडवृत्ति उदेहोती

है तबही पुनर्जन्मको कारण
हारे कर्मबंधन करके सहित
जोमायाहै जीवभावको प्रा
प्तकरणेहारी अविद्या सोभी
ग्रहीं लयहोजातीहै नाशको
प्राप्तहोतीहै जोकोई आशं
का करे तिसमायाके नाश
भयेते संसारका नाशकैसे
होवेगा इसका उत्तर माया
विशेषण करके कहतेहैं सो
माया कैसीहै अविद्या आ
त्माको संसार प्राप्तकरणे
का कारणहै तिस मायाके
नाशभये संते संसारकाना
श अवश्य होताहै २५ ॥

इति श्रमाणे रभिनाशितावसा कथं

भविष्यन्त्यपिकार्य्यकारिणी विज्ञान
मात्रादमला द्वितीयतन्त्रस्मादविद्या
न पुनर्भविष्यति ९९ ॥

इसी अर्थको इच्छनावास्ते फे
र कहतेहैं हेलक्ष्मण सो अ
विद्या तत्वमसी आदिक वेदां
तवाक्यरूपी प्रमाणोंकर्के
तिनसें भयाजो तत्वज्ञानहै
तिसकर्के नाशको प्राप्तकरी
तो अपना कार्य जोहै जन्मज
रामरण तिसको करणेको
कैसेसमर्थ होवेगी सर्व प्र
कारकरके बहुड अपनेका
र्यको वह नहीकरेगी आप
असत्य भईतो कार्यको कै
सेकरेगी फेर उदेबी नहीहो
तीहै इसी अर्थको फेर भी

ग॰
गी॰
टी॰
२४

कहतेहैं शुद्ध जो अद्वितीय
आत्मतत्वहै द्वैतकल्पनाते
रहित तिसके स्वरूपका अ
ज्ञानभया सो कैसाहै दूस
रेके सहायको नहीं चाहता
है और निदिध्यासनके परि
पाकतें दृढभयाहै केवल ति
सके उदेहोनेतें अविद्याजोहै
सो कदाचित्भी उदेनहीं हो
तीहै जैसें रज्जुके अज्ञान क
रकें रज्जुमों प्रतीत भया जो स
र्प है सो रज्जुके ज्ञानकरकें अ
बनष्ट भयातो फेर उदेनहीं
होताहै तैसेही आत्मतत्वका
दृढज्ञानहोनेतें संसारका
मूलजो अविद्यासो उदेन

ही ही होती है २५ ॥

यदि स्म न ष्टा न पुनः प्रसूयते कर्ता ह मस्येति मतिः कथं भवेत् तस्मा न्न तेत्रा न्न किमप्यपेक्षते विद्याविमोक्षाय विभाति केवला २१ ॥

विद्या जो है आत्मज्ञान तिस कों स्वतंत्रही मोक्षकी कारण ता कही है इसी अर्थको अज्ञाजनोंकी दृढता वास्ते युक्ति पूर्वक फेर भी कहते हैं हे लक्ष्मण सो अविद्या तत्त्वज्ञान करके जब नाशको प्राप्त भई बहोड उत्पन्न नही भई तो इस पुरुषको अहं कर्ता ऐसी बुद्धि कैसी होवेगी अर्थ यह है सो अहं क

द्धि कैसेभी नहीहोतीहै ति
स ग्रहंमतिका ग्रभावहो
नेतें कर्मकाग्रभावहोजा
ताहै इसीकारणतें बलवि
द्या जोहै सो स्वतंत्रहै ऊरकि
सीके सहायकों नहीचाह
तीहै केवल ग्रपने ग्रापही
ग्रपनाफल करणेकों मोक्ष
मों समर्थ भासतीहै २० ॥

सातैत्तिरीय श्रुतिराह सादरं न्यासंप्र
शास्ता खिलकर्मणां स्फुटम् एताव
दित्याहच वाजिनो श्रुति र्ज्ञानंविमो
क्षाय नकर्म साधनम् २१ ॥

इस ग्रर्थमों श्रुतिका प्रमा
ण कहनेहैं यजुर्वेदमों तै
त्तरीय शाखाकी श्रुतिजोहै
सो मोक्षप्राप्तीमों वेदवाक्या

करकैभी कहेहुए जो संपूर्ण क
र्महैं तिनके त्यागकों आदर पू
र्वक प्रगटकरतीहै समुच्चय
कों नंहीकहतीहै तिसश्रुतिका
यह अर्थहै क्यामुमुक्षु पुरुष जो
है सोकर्मकरकै मोक्षकों नंही
प्राप्तहोतेभये औरसंतानकरकै
भी और धनकरकैभी मोक्षकों न
ंहीप्राप्तहोतेभये और किंतु के
वल सर्व त्याग करकैही मोक्ष
कों प्राप्तहोतेभये और तैसेही
वाजसनेयी कीजो श्रुतिहै सो
भीइसी अर्थकों कहतीहै क्या
ऐसैमैत्रेयी मुमुक्षु पुरुषकों
एतावन्मात्रही मोक्षसाधनहै
सो क्या सर्व कर्मोंका त्यागक

भ. गी. टी. २८

रण इसीकारणतें मोक्षगामी
वाले ज्ञानहीसाधनहैं कर्मनही
हैं २१ ॥

विद्यासमत्वेनतु दर्शितस्त्वया क्रतुर्न दृ
ष्टांत उदाहृतःसमः फलैःपृथक्त्वाद्बहु
कारकैःक्रतुः संसाध्यते ज्ञानमतोविप
र्यये २२ ॥

इसकर्कै अहंकारकी समताक
कै और अहंकारकी अमता क
कै कर्मकी और ज्ञानकी भिन्न
भिन्न सिद्धहोतीहै इसैं दोनोंमों
कारणोंकीविषमताकहीहै अ
वइनकी फलसिद्धीकीभीविष
मताको कहतेहैं जिसवास्ते
समुच्चय वादीको प्रश्न करते
हैं हेसमुच्चय वादिन् तैंने
यज्ञकर्म जोहै सो अपनी
युक्ति कर्कै ब्रह्मविद्याके स

मान कह्याहै परंतु तिसकों
सिद्धकरणेहारा दृष्टांतका
उदाहरण कोईनही दिषा
या जोइस दृष्टांतकरकें यज्ञ
कर्म ब्रह्म विद्याके समानहै
किस्सें वेदविधीकरकें कहीहु
ई कर्तव्यतातें इस करके पूर्व
कह्या हुआ तुमारा अनुमा
नभी प्रमाण नहीहै सो कि
सें दृष्टांतके अभावतें जो तु
म इस प्रकारका अनुमान
सिद्धकरो जो ज्ञानकर्म दो
नों समानहैं किस्सें मोक्षरु
पी एकफल होनेतें किस
की न्याईहै जैसें घटकेरच
न करणेमों चक्रदंडादिकों

भ॰
गी॰
टी॰
२२

२७

की सहाय संपदा बनी है य
ह तुम कहोतो नही बनता
है क्यों नहीबनताहै इनका
फल सिद्धि करके भेदबन्याहै
तिसभेदकौंही हमकहतेहैं
हेभाई तुम्हारा यज्ञकर्म जो
है सो मैंयज्ञकर्मका कर्ताहूं
यह कर्ममेराहै इस प्रकार
की अहंता ममतादिक अं
तरीयसाधनहैं और उत्तमदे
शकाल साधन सामग्री जो
हैसो बाह्यसाधनहैं तिनक
के यज्ञकर्म सिद्धहोताहै औ
रब्रह्मविद्याजोहै ज्ञान सो
इसकी विपरीततातें अहं
ता ममतादिकोंके और बा

स्वात्मसाधनों कैंसर्वत्याग
करके सिद्धहोतीहै २२ ॥

सप्रत्यवायो ह्यहमित्यनात्मधी रज्ञप्र
सिद्धा नतु तत्वदर्शिनः तस्माद्बुधैस्त्या
ज्य मपि क्रियात्मभि र्विधानतः कर्म
विधि प्रकाशितं २३ ॥

जो वादी शंकाकरै वेदोक्त
कर्मोंके नहीकरणेमों दोष
प्रापतहोताहै कर्मत्यागने
करकै पापहोताहै तिसके
भयतें कर्मकरणेयोग्यहैं
इसका उत्तर कहतेहैं हेल
क्ष्मण आत्मा सदाशुद्धहै
तिसमों कर्मत्यागनेके दो
षवाली जो बुद्धि होतीहै
सो अनात्म धर्मवाली बुद्धी
है आत्मविचारके धर्मवा

रा॰
गी॰
टी॰
२८

ली नहीहै जो पुरुष आत्म
विचारतें रहितहै तिसकों
प्रसिद्धहै आत्मविचारवाले
कों एसी बुद्धीनही होतीहै
उसकों केवल आत्मबुद्धी
होतीहै पापादिक जोहै सो
आत्माके धर्मनहीहै तिसें
कर्मकांड वालेउंने विधान
करकें कल्पाहुआ जो कर्महै
सो विधिककें अवश्यमेव
करणेयोग्यहै इसप्रकारक
कें सिद्धभयाहै तोभी तत्व
वेत्ता पुरुषोंने अवश्यमेव
त्यागदेवना २३ ॥

ब्रह्मात्विन तत्वमसीति वाक्यतो गुरो
प्रसादा दपिशुद्ध मानसः विज्ञाय
चैकात्म मथात्म जीवयोः सुखीभवे

अबविरक्त पुरुषके लक्षणकों
कहतेहैं हेलक्ष्मण गुरुवा
क्यमें और शास्त्रविचारमें
औरशास्त्रविचारमें दृढवि
श्वासजोहै तिसकों श्रद्धाक
हतेहैं तिसकरकें युक्त जोत
त्व जाननेकी इच्छावाला पु
रुषहै निष्काम कर्म करणे
तें शुद्धमनवाला भयाहुआ
ईश्वरोंके प्रसादतें प्राप्तभ
याहै तत्वमसी इसमहावा
क्यका उपदेश जिसकों
तिसें जीवात्मा परमात्मा
की एकरूपताकों जानक
कें तिसके अर्थकों मनमें

ग॰
गी॰
टी॰
२५

२५

निरंतर विचारणेतें मनन
होताहै और बुद्धीमें दृढनि
श्चय करणेतें निदिध्यासन
होताहै तिनकेपरि पाकतें
परमात्माकी जीवात्माकी
एकरूपताकों साक्षात्कार क
रकेही सो पुरुष सुखीहो
ताहै अर्थयहहै सर्वदुःखों
सें रहितहोताहै कैसाहोता
है अंतःकरणमें विषयों
की अभिलाषाके लेशतें र
हितहोताहै कैसें जैसें सुमे
रूपर्वतजोहै सो इसपृथ्वि
वीमें अचलहै किसीकरकें
भी अपनेस्थानतें नहीचल
ताहै तैसें उस पुरुषका चि

नभी कामादिकों करके व्या
कुलनहीं होताहै २४ ॥

आदौपदार्थावगतिर्हि कारणं वाक्या
र्थविज्ञान विधौ विधानतः तत्त्वंपदा
र्थौ परमात्म जीवका वसीति चैका
त्म्य मथान योर्भवेत् २५ ॥

अबतत्वमसि इसमहावा
क्यके अर्थको जाननेवाले
प्रथम तिसके पदोंके अर्थ
कों कहतेहैं हे लक्ष्मण सं
शयतें और चित्तके विक्षेप
तें रहित महावाक्यके अ
र्थकी ज्ञानसिद्धिमों प्रथम
तो तिसके पदोंके अर्थकों
जो जानताहै सोकारणहै
तिसमहा वाक्यके तीनप
दहैं सो कौनहैं एकतो त

पदहै और एकत्वपदहै औ
रतीसरा असिपदहै अब इ
नके अर्थोंको तुम सुनो ति
नमों तत्पदका अर्थ परमा
त्माहै सो सर्वजगत्का ई
श्वरहै सर्वज्ञतादिक परम
उत्तम गुणोंवालाहै औरत्व
पदका अर्थ जीवात्माहै सो
अल्पज्ञहै और जन्मजरामर
णादि दोषोंवालाहै और अ
सिपद जोहै सो इनदोनोंकी
एकरूपताके अर्थको जना
वने हाराहै २५ ॥

प्रत्यक् परोक्षतादि विरोध मात्मनो वि
हाय संग्रह्य तयो श्चिदात्मताम् संशो
धितां लक्षणयाच लक्षितां ज्ञात्वाख
मात्मान मथाद्वयम्भवेत् २६ ॥

इहां कोई आशंका करे ई
श्वर जो है सो सर्वज्ञतादि
गुणोंवाला है और जीव जो
है सो अल्पज्ञता दिगुणोंवा
ला है इन दोनोंकी एकरू
पतामों महाविरोध भासता
है सो एकरूपता कैसे बने
गी इसका उत्तर सुनो २९

एकात्मकत्वा ज्जहती नसंभवे त्तथाज
हल्लक्षणा ताविरोधतः सोयंपदार्थी
दिवभाग लक्षणा युज्येततत्वं पदयो
रदोषतः २९ ॥

हेलक्ष्मण श्रेष्ठे बालक इस
प्रकारकी देह इंद्रियादिकों
मों आत्मप्रतीति है सोजी
वात्माका धर्म है और सर्वज्ञ
ता सर्व प्रेरकता सर्वजग

रा॰
गी॰
टी॰
३२

31

नकी ईश्वरता दिकजोहै सो
परमात्माका धर्महै इनध
र्मों कर्कै परमात्मा मों श्रोर
जीवात्मामों विरोध बन्याहै
तिसविरोधकों त्याग कर्कै
तिनकी जो शुद्धचैतन्यताहै
सोकैसीहै युक्तीयों कर्कै शु
द्धकरी हुईहै भलेप्रकारक
कैं विचारीहुईहै ततपदकर्कै
त्वंपदकर्कै सो बनती नही
है तोभी श्रागेंकहना जोलक्ष
णाका प्रकारहै तिसकर्कै
लक्षितभईहै ऐसी जो शुद्ध
चैतन्यताहै तिसकों ग्रहण
कर्कै ततपद त्वंपदके विष
यमों स्थापनकर्कै श्रापने

आत्माको तिस प्रकार शुद्ध
चैतन्य जानकर्के तिसके
अनंतर अद्वितीय चैतन्य
स्वरूप होताहै यद्यपि प्रहि
लेभी शुद्ध चित् स्वरूपहै प
रंतु अज्ञानकर्के अपने स्व
रूपको भूलगयाहै इसको
चित्स्वरूपताकी प्राप्ती कैसे
होतीहै जैसे किसी पुरुषके
अपना कंठभूषण लगाहु
आहीहै परंतु भ्रमकर्के भू
लगयाहै सो पुरुष व्याकु
लताको प्राप्त होताहै जब
उसका भ्रमनिवृत्तहोताहै
तब उसको आपने कंठभू
षणका महाआनंद प्राप्त

गी॰
टी॰
३२

32

होताहै जैसेही इस प्रकृषकों
विल्लक्षणताकी प्राप्तीका प्रा
नंदहोताहै इस अर्थका य
हभावहै कत तत्पदके औ
रत्वंपदके दोनो अर्थहै एक
वाच्यअर्थ है एकलक्षअर्थहै
वाच्यअर्थ अज्ञरोंकाहै और
लक्षअर्थप्रयोजन सिद्धीका
है अब इनदोनों पदोंके दो
प्रकारके अर्थोंको कहतेहैं
तिनोंमों तत्पदका मायाकी
उपाधि वाला सर्वज्ञत्वादि गु
णोंवाला ईश्वर चैतन्यवाच्य
अर्थहै जैसेही त्वंपदका अ
ल्पज्ञत्वादिगुणोंवाला देहें
द्रियादिकोंके प्रसंगवाला

जीव जोहै सो वाच्यअर्थहै
तिन्हमों सर्वज्ञत्वादिकोंका
विरोधबन्याहै तिनविरोधवा
ले अंशोको त्यागकरकें ति
नदोनो अर्थोमों शुद्धचैतन्य
जोहै सो लक्ष्यअर्थहै सोही
प्रयोजनभूत अर्थहै यद्य
पि तिनके वाच्यअर्थोका
आपसमों विरोधभासताहै
तथापि लक्ष्यजो अर्थहै शु
द्ध चैतन्य तिनकी एकरूप
ता जोहै सोनिर्बाधहै दोष
भीनहीहै उनमों विरोधभी
नहीहै वास्तवतें सोदोनो
चैतन्य एकरूपहीहै उनकी
एकरूपता बनजातीहै अ

ग॰
गी॰
टी॰
३३

33

लक्षणाके प्रकारकों कह
तेहैं सोलक्षणा क्याहोतीहै
हेलक्ष्मण लक्षणा तीनप्र
कारकीहै एकजहत् लक्ष
णाहै और एक अजहत् ल
क्षणाहै तीसरीजहत् अज
हत्नामवालीभाग लक्षणा
है अबइनके लक्षणसुनो
जौनसावाक्य अपनेअर्थकों
त्यागकर्के अपने संबंधक
के किसी औरके अर्थको प्र
योजन सिद्धीवास्ते जनावे
तहां जहत् स्वार्थी लक्षणा
होतीहै इसका उदाहरण
कहतेहैं जैसे किसी पुरुष
नें कहाजो गंगामों अहीरों

का गामबसनाहै तोगंगा
के प्रवाहमों गामकाबसना
नहीं बनताहै तोगंगापद
जोहै सो अपने अर्थकोंत्या
गकर्के अपनेतटमों अही
रोंकेग्रामके वसनेके अर्थ
कों कहताहै तैसें इहां तत्व
मसिवाकामों सोजहत् ल
क्षणनहीं होतीहै सोकों
कर्के इहांतत्पद ओर त्वपद
जोहैसोअपना मुख्य अर्थ
जोहै सो अपनी शुद्धचैतन्य
ता तिसकों नहींत्यागकर
तेहैं इनके अर्थकी शुद्धचै
तन्यता सदावनीहुईहै औ
रतैसेंही अजहनलक्षणा

ग॰
गी॰
टी॰
३५

34

भी इहांनहीबनतीहै अब
इसकाभीलक्षणकहतेहैं जो
नसावाक्य अपने अर्थको
नहीं त्यागकरे और प्रयोजन
की सिद्धीवास्ते किसी और
के अर्थकोंभी जनावे सो अ
जहत् स्वार्थी लक्षणाहोती
है अब इसका उदाहरण
कहतेहैं जैसेंकिसी पुरुष
नेकहाहै काकोंसें दधीकी
रक्षाकरणी अर्थात् जितने
और दधीकेविघातकजीव
हैं उनोंसें रक्षाकरणी सो
कहीये अजहतलक्षणा
सोभी इहांनहीं बनतीहै
सोकैसें ततपद त्वंपद जो

है सो अपने मुख्य अर्थ को
अत्यन्त कहते हैं उनका अर्थ
अत्यन्त प्रतीत होता है और अ
पने में भिन्न और किसी के
अर्थ को ग्रहण नहीं करते
हैं तिनके अर्थ जो हैं पूर्वका
ल और वर्तमान काल तिन
का आपस में विरोध है सो
विरोधवाले अर्थों के विशेष
णों का त्याग होता है परंतु अ
पना जो मुख्य अर्थ है सुद्धचे
तन्यता उसका त्याग इहां न
ही होता है इस कारण ते इ
हो भाग लक्षणा बनती है
अब उसका लक्षण भी क
हते हैं जिस वाक्य में विशे

ग॰
गी॰
टी॰
३५

35

षणोंका आपसमों विरोध
होवे औरमुख्यअर्थका वि
रोधनहीहोवे और विशेषण
विरोधकर्के अर्थनही बने
तो विरोधवाले विशेषणों
के अर्थको त्यागकर्के शुद्ध
अर्थमों लक्षणाहोतीहै इस
का उदाहरण भीकहतेहैं
जैसें किसीनेकहा जोसो य
ह देवदत्तहै सोकौनजो पू
र्वकालमों हरदेशमों हम
नेदेखा आथा इहांपूर्वकाल
के हरदेशके और वर्तमान
कालके इसदेशके विरोध
कर्के अर्थनहीबनताहै ति
सों विरोधवाले अंशोंका प

त्यागकरकै केवलदेवदत्त
के स्वरूपका अर्थबोधहोता
है तैसेही इहांभी सर्वज्ञता
का और अल्पज्ञतादिकोंका
विरोधहै तिसकों त्यागकरकै
तत्वे इनदोनों पदोंका असि
पदकरकै केवल शुद्धचैतन्य
ताका बोधहोताहै २७ ॥

रसादि पंचीकृत भूत संभवं भोगालयं
दुःख सुखादि कर्मणाम् शरीर माद्यं
त वदादि कर्मजं मायामयंस्थूल मुपा
धिमात्मनः २८ ॥

अब विचार करकै दृढवैरा
ग्यवास्ते जीव रूपी उपाधी
कों कहतेहैं हेलक्ष्मण य
हस्थूलदेह केमाहे पृथिवी
जलतेज वायु आकाश य

ह पंचभूत जोहैं तिनके पंची
करणसें उतपन्न भयाहै सो
पंचीकरण कैसें होताहै सो
सुनु एक एक भूतके दोदो
भागकरे इस प्रकारकरके
पंचभूतोंके दशभागहोतेहैं
तिनमों पांचो भूतोंके एकए
कभागके चारचारभागकरे औ
र आधे जोपहिले भागहैं उ
नकों भिन्न भिन्न राखलेवे
जोंनसें चार चार भागहैं उ
नकों अपनेसें इतरे भूतके
भागोंके साथ भिन्न कर मि
लावे तो सभही पांचपांच
भागवाले बनजातेहैं इनमों
जिस जिसका भाग अधिक

है सो उसमनके नामवाला
शरीर होताहै इसशरीरमों
पृथ्वीकाभाग अधिकहै इ
सै यहपार्थिव शरीरहै औ
रदेवादिकशरीरमों आका
शका तेजका वायुकाभाग
अधिकहै तिसतें वह आका
शचारीहैं अदृश्यभीहैं और
छायातें रहितहै जलचारी
जीवोंमों जलकाभाग अधि
कहै और पंछी आदिकोंमों
पवनकाभाग अधिकहै ति
सैं सदा उडसकतेहैं इसी
तरासे और भी जानलेनें
सोयह शरीर सुखदुःखको
देनेहारेजो पुण्यपाप कर्म

हैं तिनके भोगकास्थानहैं
इसशरीरमोंही सुखदुःख
भोगे जातेहैं सोकैसाहै उ
त्पतिनाशवालाहै और पूर्व
जन्मके जो प्रारब्धकर्महै ति
नसें उत्पत भयाहैं बहुड के
साहैं मायासें उत्पनभयाहै
सोकिसें मायामें अहंकार
भया अहंकारसें पांचभूतभ
ये पांचभूतोसें शरीरप्रगट
होताहै सोमायामयहै सोय
ह शरीर जोहै तिसको आ
त्माकीस्थूल उपाधिको क
हतेहैं आत्माकी उपाधीकों
कहतेहैं अज्ञानी लोक इसी
कों आत्मा मानतेहैं २८ ॥

सूक्ष्मंमनो बुद्धिदशेंद्रियैर्युतं प्राणै रपंची
कृतभूत संभवम् भोक्तुःसुखादे रनुसा
धनंभवेत् शरीरमन्यद्विदु रात्मनोबु
धाः २५ ॥

अब आत्माकी सूक्ष्मउपाधी
कों कहतेहैं सूक्ष्मउपाधीका
है सूक्ष्मशरीर सोकैसाहै
स्थूलशरीरमें और है इसरा
है तिसकों तत्ववेत्ता पुरु
षजोहै सोसूक्ष्मशरीर कह
तेहैं अब उसके स्वरूपकों
भी कहतेहैं सूक्ष्मकिसेहै
नेत्रादिक इंद्रियोंके गोचर
नहीहै सोकैसाहै मनकर्के
बुद्धिकर्के दशइंद्रियों कर्के
पंचप्राणोंकर्के युक्तहै तिस
मों संकल्प विकल्पकी ह

नेवालामनहै और निश्चया
त्मकहोनेवाली बुद्धीहै और
नासिका जिह्वानेत्र त्वाक
र्ण यहपांच ज्ञानेंद्रियांहैं सो
पांचभूतोंके सात्विक अंशों
ने प्रगट भईयांहैं औरवाणी
हाथचरण गुदालिंगयह
पांचकर्मेंद्रियाजोहै सो पां
चभूतोंके राजस अंशोंने प्र
गट भईआंहै सोपांचभूतों
के जोगुणहैं शब्दस्पर्श रूप
रस गंध इनको अपने उप
जेवाले भूतोंके गुणोंको
ग्रहणकर्तीआंहै पांचोंज्ञा
नेंद्रियांहैं औरतैसेही कर्में
द्रियाभी आपनी आपनी उ

त्यागिवाले गुणोंको बचन
कहना ग्रहणकरणा गम
नकरणा मलमूत्रत्यागना
कामभोगकरणा इन्हको
ग्रहण करनीओहे ओरप्रा
ण अपान व्यान उदान स
मान यह पंचप्राणहैं सो हृ
दयमों गुदामों नाभीमों कं
ठमों सर्वशरीरमों स्थितहै
सोसभही इसस्थूल शरीरमोंहैं
सोसूक्ष्मशरीर जोहै सोसम
दशतत्वोंवालाहै पंचप्राण
मनबुद्धि दशइंद्रियां यहसम
तदशतत्वहै बहुड कैसाहै
सूक्ष्मशरीर अपंचीकृत जो
भूतहैं पंचीकरणते रहित

ग॰
गी॰
टी॰
३९

39

जिनमें उपज्याहै बहुरकैसा
है सुखदुःखको भोगनेहारा
जो आत्माहै तिसको भोग
भोगनेका साधनहै क्या ग्रंथ
कार हरकरणोमो दीपककी
न्याई अथवाकाष्टादिक छेद
नेमो कुठारादिकोंकी न्याई
साधनबन्याहुआहै स्थूलश
रीर जोहै सो इससूक्ष्मशरी
रके अनुसारहोवे तो भोगों
की सिद्धी होतीहै और इस
सूक्ष्मशरीरका स्थूलशरीर
का जब बियोगहोजाताहै
तोमरणावस्थाहोतीहै यह
अर्थविचार लेणा २९ ॥

अनाद्यनिर्वाच्यमपीह कारणं मायाप्र

थानंत्र परं शारीरकम् उपाधि भेदात्र
यतः पृथक् स्थिते स्वात्मान मात्मन्यव
धारयेत्क्रमात् ३॥

इस प्रकार स्थूलशरीर सूक्ष्म
शरीरकों कहिकर्के अबई
श्वरका रचनकियाहुआ का
रण शरीर जोहै तिसकों क
हतेहैं हे लक्ष्मण इनदोनों
शरीरोंमें और तीसरा शरीर
है तिसकों कहतेहैं सो कै
साहै अनादहै उत्पत्तिभी न
हींहै नाना प्रकारके परिणा
मवालाहै इसतें विनाशवा
लाहै अनादिकैमेंहै जीवात्मा
तें पूर्वबन्धा हुआहै बहुडकै
साहै अनिर्वाच्यहै सत्यकह
नेमेंभी नहींहै और असत्य

गा॰
गी॰
टी॰
भं॰

५०

कहने सोभी शक्यनहीहै
कार्यरूपकर्के अमन्यहै और
प्रवाह रूपकर्के सत्यहै बड़
डकेसाहै सर्वप्रपंचका का
रण बन्या हुआहै वड़ड केसा
है मायाप्रधानहै यहईश्वर
कीमायाहै इसतें सभसे प्र
थिकहै औरशरीर केसेहैं
आत्मज्ञानकर्के नाशशील
हैं इस प्रकारकरके सोचन
न्य वस्तु एकहीहै परंतु मा
याकी समष्टि व्यष्टि दोउपा
धियोंकर्के भिन्न भिन्नहोग
याहै एकजीव बन्याहै एक
ईश्वर बन्याहै समष्टिकर्के
ईश्वरहै सोमायाको सर्वज

गतमों प्रवृत्त करताहै ग्रा
रजीवमायाके ग्रधीनभया
है तिसग्रात्माकों लक्षण
करके उपाधीते भिन्न करके
क्रमसे श्रवण मनन निदि
ध्यासनके क्रमकरके ग्रपने
ग्रात्माको ग्रपने ग्रंतःकरण
मों ईश्वरते ग्रभेदरूप करके
एकरूपकरके जानलेवे ३:

कोशेषु पंचस्वपि तत्तदाकृति र्विभाति
संगात्स्फटिको मलो यथा ग्रसंगरूपोय
मजो हृयोपिवा विज्ञायतेस्मि न्परितो
विचारिते ३१ ॥

ग्रबमहा वाक्यके ग्रर्थका
जो बिचार भया उसके फल
कों कहनेवाले पांचकोशा
के विचारकों कहतेहैं हेल

रा
गी॰
टी॰
५२

ष्मण इनतीन शरीरोंमों पं
चकोशबनेहैं सोकौनहैं पं
चकोश सोकहन अन्नमय प्रा
णमय मनोमय विज्ञानम
य आनंदमय एहीपंचकोश
हैं इहस्थूलशरीर जोहै सोअ
न्नपानकी ह्वंदमें प्रगटभया
है सोअन्नपान करकेही बढ
ताहै अन्नपान विनाक्षीणहो
जाताहै और इसके अंदर सू
क्ष्म शरीरमों कर्मेंद्रियोंकरके
सहित पंचप्राणोंका प्राण
मय कोशहै उसके अंदर ज्ञा
नेंद्रियों करके संयुक्त मनजो
है सो मनोमय कोशहै सो
संकल्पवानहै ३ और उसके

अंदर ज्ञानेंद्रियोंकरकै मयु
क्त बुद्धिजोहै सो विज्ञानम
यकोश है सो निश्चयको क
रणेहारा है ४ उसके अंदर
गाढ अज्ञान निद्रावालामा
या करकै आनंद मयकोश
है उसकी यह प्रतीत है का
मैं सुखकरकै सोय गयाथा
मैनेक छुभीनही जान्याहै
कोश कैसे कहते हैं जेसे
तरवारको मियानका पड
दाहोताहै अथवाजेसे सर्प
के उपर त्वचाहोतीहै तेसे
आत्माके स्वरूपको छिपा
वने निमित्त यह आवरण
बनेहैं ३ यह आतमा जो

ग.
गी.
टी.
५२

52

है सो इन्ह पांच कोशोंमें प्रा
प्तभया हुआ इनकोशोंके
स्वरूप वाला अज्ञानकी उपा
धी कर्के भासताहै इसमें दृ
ष्टांतहै जैसे स्वभाव कर्के नि
र्मल जोस्फटकहै सोरक्त पी
तादि रंगोंके प्रसंगकर्के र
क्त पीतादिक स्वरूपजैसा
भासताहै तैसेयह आत्माभी
भासताहै परंतुइस महावा
क्यमें अछीतरासे विचारक
रणेमें यहआत्मा जोहै सो
इस प्रकारकरके जानीताहै
सोकैसेयह आत्मा असंगहै
पंचकोशोंके संगतें रहितहै
और अजहै जन्मरहितहै सो

रअहंतीयहै मदापकरूप
है अज्ञानकर्के देहादिकोंमों
अहंता ममतादिकोंकी अती
तिहै तिसकों जो हरकरणा
सोही विचारकाफलहै ३१

बुद्धे स्थियाहृति रपीहृदृष्टपने स्वमादि
भेदेन गुणत्रयात्मनः अन्योन्य तोऽस्मिन्
व्यभिचारतोमृषा नित्ये परे ब्रह्मणि केव
ले शिवे ३२ ॥

हेलक्षण पहिले कहेजोती
नशरीरहै सो जैसे आत्मान
हीहै तैसे पंचकोशजोहै सो
भी आत्मानहींहै औरतिनमों
जाग्रतस्वप्न सुषुप्ति यहती
न अवस्थाजोहै सोभी आत्मा
केधर्मनहींहै सो अवस्याती
नो बुद्धीके धर्महै यहीमें तेरे

ग॰
गी॰
टी॰
४३

प्रति कहताहों इस आत्मामों
स्वप्नादि भेदकर्के जाग्रत्स्वप्न
सुषुप्ति इसतीन प्रकारके भे
द कर्के जौनसीआ तीनन अ
वस्था देखनेमों आवतियाहै
सोभी त्रिगुणात्मक जो बुद्धि
है सत्वरज तमो गुणके स्वरू
पवाली उस केधर्महै इन ती
नअवस्थोंके तीनो गुणमूल
है सत्व गुणवाली बुद्धिकर्के
जाग्रतहोतीहै रजोगुण वा
ली बुद्धिमों स्वप्नावस्था हो
तीहै तमोगुण वालीहति
नें सुषुप्त होतीहै आत्माजो
है सोइनतीनो अवस्थोंका
साक्षीहै तिस आत्माके स्वरू

एका भान भए हुए यह अ
वस्थोंका भानहै सोमिथ्या
ही बुद्धीकी प्रतीतिहै वास्त
वनहीहै सोकिसे इनतीनों
अवस्थोंका आपसमों व्यभि
चारहै एक अवस्थाके भान
मों अवर दोनों अवस्थोंकी
अप्रतीत होजातीहै सो ती
नों अवस्था एककालमों इ
कठी नहीहोतीओहै जाग्रत
मों स्वप्न सुषुप्ति नहीहै स्व
प्नामों जाग्रत्सुषुप्ति नहीहै
सुषुप्तिमों स्वप्न जाग्रतनही
है यह बुद्धिकीओ हतिओ
है आत्माकियानहीहै इसे
आत्मा इनके आश्रयनही

है सोकैसाहै नित्यहै उत्पत्ति
नाशाने रहितहै ओरसभने
परेहै तीनगुणोंने परेहै ओ
र ब्रह्महै सर्वव्यापीहै ओरशि
वहै सच्चिदानंद रूपहै ऐसा
सदा एकरस जो आत्माहै ति
समों आपसमों व्यभिचारवा
ले इनधर्मोंका असंभवहै
३२ ॥

देहेंद्रिय प्राण मनश्चिदात्मनां संगाद
जस्त्र परिवर्तते धियाः वृत्तिस्तमो मू
ल तयाच लक्षणं यावद्भवेत्तावदसौ
भवोद्भवः ३३ ॥

अब सर्व त्यागके वास्ते सं
सारकी मूलभूत जो वृत्तिहै
तिसको कहतेहैं हेलक्ष्मण
देहेंद्रियां प्राण मन और चे
तन्य स्वरूप जो आत्माहै इ

नकाजबलग निरंतर संबं
धवाली बुद्धिकी हनी उदेहो
तीहै सो कैसेही तमोगुण
रजोगुणहीहै मूल जिसका
सोही अज्ञानाका लक्षणहै उ
सीकों जडचित् ग्रंथीकहते
हैं सोजड चित ग्रंथी जबल
ग बनीहै तबलगही यहसं
सारका उदय बन्याहै अर्थय
हहै जबलग रजो गुण तमो
गुणकी हतिवाली बुद्धि ब
नीहै तबलगही यहसंसार
सत्यप्रतीत होनाहै तिसें सो
तमोगुण रजोगुणवाली हु
ति अवश्य त्यागने योग्यहै
३३ ॥

नेति प्रमाणेन निराकृताखिलो हृदा स
मास्वादितचिद्घनामृतः त्यजेदशेषं जग
दात्तसद्रसं पीत्वा यथाम्भः प्रजहाति त
त्फलम् ३४ ॥

45

अब जिस पुरुषनें महा वा
क्यके अर्थका दृढ विचार
कियाहै उसकी कर्तव्यताकों
कहतेहैं हे लक्ष्मण जिस पु
रुषनें महावाक्यके अर्थका
तात्पर्य जान्याहै सो इसप्र
कार करकें जगतकों त्यागदे
वे कैसाहै सो पुरुष इस सं
सारमें सत्य कछु नहीं है ने
ति नेति इसप्रमाण करकें अं
तःकरणमें दृढकियाहै मि
थ्याजान लियाहै संपूर्ण ज
गत जिसनें और ज्ञान वैरा

ग्यादिकों वाला जो मन है
तिसकर्के अधीनतां में आ
स्वादन किया है चिदानंदरू
पी परमात्मन जिसनें कैसा
है चिदानंदात्मन जिसकों
पाइकर्के दुःखका कछुभी
लेश नहीं रहताहै औरस्वर्ग
भोगादिक जोहै सो क्षणक
मके भोगके अंतमों दुःख
कोंही करतेहै इसीतें स्वर्ग
भोगोंकर्के सहितदेहेंद्रिया
दिकजो जगतमों हश्यमा
नहै तिसकों संपूर्ण त्या
गदेवे ग्रहणकरणा त्याग
करणा इसप्रकारकी बुद्धी
की कल्पनाकों नहीं करे स

ग॰
गी॰
टी॰
४८

भसें सर्वप्रकार करकें उदासी
नहोजावे इसमों कोई आशं
काकरे जोदेह इंद्रियादिकों
करकेंही आत्मज्ञानकी प्राप्ति
भईहै इसे देहेंद्रियादिक इ
सके उपकारीहै उनका त्या
गजो करणाहै सोकृतघ्नता
है इसका उत्तरसुनो जैसेको
ई पुरुष मार्गचलकरकें व्या
कुलभयाहै सो जिसफलनें
आपनें परिपक्कहोने करकें
अपनेमों महामधुररससि
द्ध कियाहै उसफलकेरस
कों सो पुरुष आस्वादन क
रकें तिसनारकेल नारंगी
आम्रादिक फलकों निःसा

५८

र जानकर्के त्यागदेताहै
फेर उसको नहीं देखताहै
तैसे संपूर्ण दृश्यमों सार
वस्तु परब्रह्मही है उसका
लाभ भयातो इस दृश्यकी
ग्रहणत्यागकी कल्पना न
ही करणी ३४ ॥

कदाचिदात्मा नमृतो नजायते नक्षी
यते नापि विवर्द्धते नवः निरस्त सर्वा
ति शयः सुखात्मकः स्वयंप्रभः सर्व
गतोय मद्वयः ३५ ॥

ब्रह्मसे इतर जोकछुहै सो
असारहै अनित्यहै दुःखरू
पहै तिस्से वैराग्यकी दृढ
तावास्ते आत्माकी नित्यता
को कहतेहैं हेलक्ष्मण य
ह आत्माकदाचितभीनप

गी·
टी·
५२

आनही बन्याहै सो किसे उ
त्पत्ति नहीहोताहै तिसे इ
सका जन्मनहीहै इसीतें
सत्तभीनहीहोताहै इसीतें
बढ्ड जन्मताभी नहीहै इ
सीतें छीणभी नहीहोताहै
इसीतें बडताभी नहीहै य
थे यहहै जन्मादिक षडभा
वों तेरहितहै इतरजो कछु
दृश्यहै सोजन्मादिक षड
भावों वालाहै इसें अनित्य
है इसकारणतें दृश्यतें वि
लक्षहोवे यह आत्मा कैसा
है जिसे षडभावोंतें रहित
है इसीतें हरकियाहै देह
इंद्रियादिकोंका माहात्म्य

जिसने बहुड कै माहै स्वरू
प लाभकर्के पूर्णहै इसलेही
सवरूपहै आनंद रूपहै जि
सके लाभने और अधिकला
भ नहींहै जिस्से यह स्वयंप्र
काशहै देह इंद्रियादिकोंको
प्रकाश करणे हाराहै और
इंद्रियादिक जोहै सो केवल
सब्द इंद्रियोंको प्रकाश कर
णे हारेहैं और आत्माके प्र
काशे हुए अपने विषयोंको
प्रकाशतेहैं आत्माकी स्वयं
प्रकाशतामों श्रुतीको प्रमा
ण कहतेहैं उसका यह अ
र्थीहै जिस आत्माके प्रकाश
कर्के यह संपूर्ण भासताहै

रा॰
गी॰
टी॰
५८

सो आत्मा स्वयंप्रकाशहै बड़ा कैसाहै आत्मा सर्वगतहै सर्वव्यापीहै जोपरमात्माहै सोहीजीवात्माहै इसीतें श्रुतिनी यहै जीवात्मा परमात्मातें इतरनहीहै इस अर्थको श्रुती भीकहतीहै यहआत्मा ब्रह्महै ३५ ॥

एवं विधे ज्ञानमये स्वात्मके कथंभवो दुःखमयः प्रतीयते अज्ञानतोध्यास व शात्प्रकाशाते ज्ञाने विलीयेत विरोधतः क्षणात् ३६ ॥

यहां आशंका कोई करे जो आत्मा इस प्रकार करके निर्विकारहै तो इसमों जन्ममरणादिविकारों वाला संसार कैसे प्रतीत होताहै के

साहै ॐःखरूपहै अनेकउः
खोंककै भूमीहै इसका उत्त
र कहतेहैं क्यायह संसार
अज्ञाननें प्रतीतहोताहै हे
लक्ष्मण अज्ञानसें भयाजो
अध्यास है सो क्याहै देह इं
द्रियां अंतःकरणादिकों मैं
अहंबालाणः अहे देहः अ
हमिंद्रियाणिमैं देहहे मैंइं
द्रियांहे यह दारा पुत्र ध
नादिक मेरेहैं यह अध्यास
है भ्रांतिसें प्रतीत होता
है वास्तव नहींहे इसमों
फेर आशंकाकरेहे जो इस
प्रकारका संसारहै सोइस
की निवृत्ति कैसेहोवेगी इ

रा॰
गी॰
टी॰
५९

59

मका उत्तर कहतेहैं आत्म
ज्ञानके प्रकाशभयेते ली
नहो जाताहै ज्ञानका और
अज्ञानका विरोधहै तेज त
मकी न्याईहै जब ज्ञान प्रग
टभया तबही संसार नष्टहो
जाताहै जैसें जेवडीके ज्ञान
भए हुए सर्पकी भ्रांति नष्ट
होजातीहै ३९।

यदन्य दन्यत्र विभाव्यते भ्रमादध्यास मि
त्याहुरमुं विपश्चितः असर्प भूतेहि वि
भावनं यथा रज्वादिके तद्वद पीश्वरे
जगत् ३० ॥

अबअध्यासके लक्षण को
कहतेहैं जोकछु औरमें
और कछु भ्रमतें भासताहै
तिसको पंडित लोक अध्या
स कहतेहैं जैसें जेवडी जो

है सो सर्परूप नहीं है परंतु
सो अज्ञानतें सर्परूप भास
ती है तैसें ही ईश्वरमों जग
त नहीं है परंतु अज्ञानके
अध्यासतें संपूर्ण संसारभा
सता है आत्मज्ञान विना य
थार्थभासता है सत्यभासता
है ज्ञानकर्के लीन होजाता है
३७ ॥

विकल्प मायारहिते चिदात्मकेऽहंकार
एष प्रथमः प्रकल्पितः अध्यास एवात्म
नि सर्वकारणे निरामये ब्रह्मणि केवले
परे ३८ ॥

आत्मामों जगत भासता है जि
स प्रकार सो कहते हैं आत्मा
जो है सो संपूर्ण विकल्पोंका
कारण जो माया है तिसें आ
त्मा रहित है मायाके प्रसंग

ग० गी० टी० ५०

ते रहितहै और शुद्धचैतन्य है दुःखके प्रसंगतें रहितहै सदाआनंद रूपहै सर्वविकारों से रहितहै और परेमें भी परेमेंभी परेहै इस रूपतें विलक्षणहै और परब्रह्म है सर्वव्यापीहै ऐसेआत्मामें प्रथम अहंकारकी कल्पना होतीहै उसतेही संसारभासताहै सो अहंबुद्धिवाला जो अध्यासहै सोही संसारका कारणहै तिसें अहंकारका परित्यागही अवश्यकरणे योग्यहै ३५

इच्छादि रागादि सुखादि धर्मिकाः सदापि यः संसृति हेतवः परे यस्मान्न सत्तो न दभावतः परः सुखस्वरूपेण विभाव्यते हितः ३५ ॥

यहसंसारजोहैसो बुद्धिमों
हीहै आत्मामों नहीहै इसअ
र्थमों बुद्धीकी सत्ताकों और
असत्ताकों प्रमाण करके कह
तेहैं हेलक्ष्मण यह जो आ
त्माहै सोसभका साक्षीरूपहै
इसमोंसंसारके कारणाहोए
करके जो इछा अनिछा राग
द्वेषसुख दुःखादिक द्वंद्व ध
र्म प्रतीतहोतेहैं सोसभही
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था
मों बुद्धीके सत्ता करके प्रती
तहोतीहै सो सभही बुद्धी
के धर्महैं आत्माकेनहीहै
सोकिसें जिसकारणातें सु
षुप्ति अवस्थामों बुद्धीकीह

ग
गी॰
टी॰
५१

51

तीका अभाव होजाताहै उस
मों इनबुद्धी आत्मादिकोंने
परेजो आहै सो हमलोकोंने
सुषुप्तिके स्वस्वरूपकर्के नि
श्चय कर्के जानीताहै ओही
स्व आत्माकारूपहै सो के
सें जानीताहै जब इह पुरुष
स्वमनें रहित गाढ निद्राकों
पावताहै तब केवल स्वस्वमों
मग्नहोजाताहै जबजागताहै
तबइह इस पुरुषकों प्रती
तहोतीहै मैं महासुखकर्के
सोयाथा और कछुभी नही
जानता भया उससमयमों
आत्माके स्वस्वरूपकी प्रती
त होतीहै ३९ ॥

अनाद्यविद्यो ज्ञव बुद्धि बिंबितो जीवः
प्रकाशोय मितीर्य्यते चितः आत्मा धि
यः साक्षि तया पृथक्स्थितो बुद्ध्या प
रिछिन्न परः सएवहि ५ ॥

अब फेर ततपद त्वंपद अ
र्थके स्वरूपको कहतेहैं हे
लक्ष्मण अनादि जो अविद्या
है सोहीहै उत्पत्तिका कार
ण जिसका ऐसीजो बुद्धीहै
तिसमों चैतन्यके प्रतिबिंब
का प्रकाशजोहै सोजीवक
ह्याहै औरआत्मा जोहै परमा
त्मा सोबुद्धिकी साक्षिरूपता
करकें भिन्नहै सोअंतर्यामीहै
औरजीवकेसे होताहै मैं
जीवहं इस अहंभावतें स्व
भाविक प्रकार करकें अंतः

रा॰ गी॰ टी॰ ५२

करणके धर्मके संबंधवाला होताहै और परमात्माजोहै सो बुद्धिकी केवल साक्षिह पना करके स्थितहै ताभीय ह अंतःकरणके धर्मोसे र हितहै इसीतें बुद्धिके धर्मों के संबंधतें रहितहै बुद्धीसे परेहै इस प्रकार करके तत्व ज्ञान करके आत्माके प्रतिबिंब आधार जो बुद्धीहै ति सकाल भयेते प्रतिबिंबता कालय होनेतें सोई चैतन्य जीवहै सोई परमात्माहै ५॰

52

चिद्बिंब साक्ष्यात्म धियांप्रसंगत स्त्वेक त्र वासादन लाक्त लोह वत् अन्योन्य मध्यास वशात्प्रती यते जडा जडत्वंच चिदात्म चेतसोः ५२ ॥

अब बुद्धीका और आत्माका
परस्पर संबंधतें परस्पर ध
र्मोंका भान जोहै तिसें जड
को चैतन्यता होजाती और
चैतन्यकों जडता होजाती
तिसकोंकहतेहैं हेलक्ष्मण
चैतन्य स्वरूप जो आत्माहै औ
र चित्तजोहै तिनका आपस
मों एकरूपताका संबंधजो
भया तिसतें आपसमों अद
ल बदल करकें चैतन्यता औ
र जडता प्रतीत होतीहै चै
तन्यरूप आत्माकों जडता
प्रतीत होतीहै तिसें आत्मा
अज्ञानी प्रतीतहोताहै और
जडजो अंतःकरणहै तिस

यो॰
गी॰
टी॰
५३

53

कियेहुतिद्या जो है सो ज्ञा
नवालियोंप्रतीत होतियोंहैं
इसीकारणतेंनैयायक मन
वाले आत्माकों ज्ञानका आ
श्रय मानतेहैं ज्ञानरूप नहीं
जानतेहैं औरसांख्यमतवाले
आत्माकों जडमानतेहैं कर्म
बंधनवालेकों जानतेहैं सो
किसे कर्मों करकें इसकों स्व
र्गनरकादिकोंकी प्राप्तिकह
तेहैं जिसेइनकी आपसमों
जडता चैतन्यता प्रतीतहो
तीहै तिस अर्थकों कहतेहैं
चैतन्यका प्रतिबिंब जोहै
चिदाभास तिसका औरइंद्रि
यों करकें सहित जो मन बु

हीहै तिनका आपसमों द
ढ संबंध होनेते इनकों जड
ता और चैतन्यता अदल बद
ल करहोतीहै इसमों दृष्टा
तभी कहतेहैं जैसे अग्नीक
के तपायमान जोलोहाका
पिंडहै उसमों अग्नीकीदाह
शक्ति आइजातीहै औरलोहे
की जो पिंडाकारताहै सो अ
ग्नीमों भासहोतीहै इहांदोका
रणहैं एकस्थानमों रहणा
और आपसमों एकरूपहो
जाना तैसेही आत्माका औ
र चितका एकत्वसंबंधक
के आपसमों जडता चैतन्य
ता होतीहै ४२ ॥

गुरोःसकाशादपि वेद वाक्यतः संजात
विद्यानुभवो निरीक्षते स्वात्मान मात्म
स्थमुपाधि वर्जितं त्यजेदशेषं जडमात्म
गोचरम् ५२ ॥

अब पूर्व कहे हुए अर्थकी
दृढताके वास्ते फेरभी कह
तेहैं हे लक्ष्मण जिस पुरुष
ने गुरोंके वाक्यनैं श्रवण कि
याहै और महा वाक्योंके प्र
माणनैं विचारकरकै मनन
कियाहै तिन श्रवण मननों
करकै भयाहै आत्मज्ञानका
साक्षात् अनुभव जिसको
इसकरकै निदिध्यासन कर्या
है ऐसाजो पुरुषहै सोतिस
चिदानंद स्वरूप अपने आ
त्माको अपने हृदयमों दे
खकरकै जडजो दृश्यहै ति

सकों त्यागदेवे कैसाहै आ
पना आत्मा संपूर्ण उपाधि
योंते रहितहै तिसकों अंतः
करणमों साक्षात्प्रत्यक्ष देख
करके संपूर्ण दृश्यकों परि
त्यागकरे उदासीन होजावे ५२

प्रकाशरूपो हमजोहम सहयो सकृद्वि
भातोहमतीवनिर्मलः विशुद्ध विज्ञान
घनो निरामयः संपूर्ण आनंद मयो
हमक्रियः ५३ ॥

अब ज्ञान करके ज्ञेय वस्तु
जोहै निरुपाधि स्वरूपतिस
कों कहतेहैं मैंजोहों सो स्व
यंप्रकाश रूपहों इंद्रियादि
कों के प्रकाशतें रहितहों
अपनें प्रकाशकरके सभकों
प्रकाश करणेहाराहूं बहु

ग॰ गी॰ टी॰ ५५

55

उकैसाहे जन्मादिक विकारों
ते रहितहे और अद्वितीयहे
सजातीय विजातीय भेदतें र
हितहे बहुडकैसाहे सदैव
पराये प्रकाशतें रहितहे सू
र्य चंद्रमा अग्नीके प्रकाशते
रहितहे श्रुती स्मृतीभी इसी
अर्थको कहतीयाहै आत्माके
स्वरूपको चंद्रमासूर्य अग्नी
प्रकाश नहीकरसकतेहैं
यह उसीके प्रकाशककै प्र
काशमानहै बहुडकैसाहे
अत्यंत निर्मलहे मायाके
किये हुए आवरण विक्षेप
तें रहितहे असंगहे बहुड
कैसाहे शुद्ध ज्ञानस्वरूपहे

केवल विज्ञानरूपहै केवल चिदेकरसहै निरामयरूपहै कर्तत्व भोक्तृत्वतें शून्यहै ब्रह्मकैसाहै संपूर्णरूपहै देशकाल पदार्थके परिछेदतें रहितहै ब्रह्मकैसाहै केवल आनंदरूपहै ब्रह्मकैसाहै मनवाणीदेहके कर्मबंधनें रहितहै ४३ ॥

सदैव शुक्तोहमचिंत्य शक्तिमानतीन्द्रियज्ञानमविक्रियात्मकः अनंतपारोहमहर्निशं बुधैर्विभावितोहं हृदि वेदवादिभिः ४४ ॥

ब्रह्म कैसाहै त्रैकालमों मुक्तरूपहै देहेंद्रियादिकेधर्मतें रहितहै ब्रह्म अचिंत्यशक्तिवालाहै परमात्मास्व

ग॰
गी॰
टी॰
५८

56

रूपहे इंद्रियोंकेज्ञानतें अती
तहे इस अर्थको श्रुतीभी
कहतीहै जिसके स्वरूपतेम
न करकें सहितवाणीश्रोजोहैं
सोतहीं प्राप्तहोइककें फिर
आवतीयोंहैं सोकिसे जिसे
वहिमुख ज्ञानवालीयोंहै
बह्रड कैसाहे विकारवाले
स्वरूपतें रहितहे बह्रडके
साहे अनेनपारहे कालकी
कलनातें रहितहे बह्रड कै
साहे वेदांत शास्त्रको जान
नेहारे योगीपुरुषोंने निरंत
र अपनेहृदयमों अहंब्रह्मा
स्मि इस प्रकारकी भावना
करकें धारण कियाहे ४४ ॥

एवं सदात्मान मखंडिना त्मना विचा
रमानस्य विशुद्ध भावना हत्वा दवि
द्या मचिरेण कारकैः रसायनं यहद्ड
पासिते रुजः ४५ ॥

इस प्रकारकी भावनाकेफ
लको कहते हैं हे लक्ष्मण
इस प्रकारकी रीतिकर्के वि
षयोंकी भावनातें रहित भ
याजो एकाग्र चित्तहै तिस
कर्के आत्मचिंतन करणेहा
रे जो पुरुषहैं तिनकोभई
जो आत्मभावनाहै सो अवि
द्या जोहै संसारका मूल अ
ज्ञान तिसको शीघ्रही वि
नाश करदेतीहै सो आत्म
भावना उदेभईतो जन्मांत
रोंके देनेहारे कर्मबंध कर्के

संयुक्त अज्ञानकों निश्चय
करके हरकरतीहै इसमों दृ
ष्टांतहै जैसें उत्तम रसायन
की औषध जोहै सोरोगकों
शीघ्र हर करदेतीहै ५५।

विविक्त आसीन उपार तेंद्रियो विनिर्जिता
त्मा विमलांतराशयः विभावये देक मन
न्य साधनो विज्ञान दृक् केवल मात्मसं
स्थितः ५८॥

निमथ्याना वस्थाकी कर्तव्य
ताकों कहतेहैं आत्मध्यान
करणे हारा जो पुरुषहै सो
एकांतस्थानमों पद्मासन
लगाइ करबैठे औरज्ञानेंद्रि
यों कों जीतनेकरके शम
दमादिकों करकें युक्तहोवे
और प्राणायामादिकों करकें

जीत्याहै अंतःकरण जिसने
इसतें निर्मल भयाहै मन जि
सका केवल ज्ञानदृष्टि भया
हुआ द्रष्टा दृश्य दर्शनके
भानतें रहित भयाहुआ इस
करके निर्विकल्पसमाधीको
प्राप्त भयाहै और मुक्तिवास्ते
ज्ञानते और किसी साधनकों
नहीं जानताहै और सर्वसंग
तें रहित भयाहै औरआत्मा
मेंहीहै निष्ठाजिसकी एसा
भया हुआ केवल आत्मस्वरू
पके ध्यानमें मग्नहोवे ४८

विस्मयदे नत परमात्मदर्शने विलाप
ये दात्मनि सर्व कारणे पूर्णेश्चिदानंद
मयो वतिष्ठते नवेदवाह्यं नच किंचि
दांतरम् ४७ ॥

यो॰
वा॰
टी॰
५५

58

बहुड क्या करे जो कछु भूत भविष्यद्वर्तमान विश्व है तिसों आत्मदर्शनकी भावना करे कृतीभी कहता है तिस आत्माके प्रकाशकरके सं पूर्ण विश्व भासता है तिस से पूर्ण विश्वकों मायाकी उपाधी पूर्वक सर्वजगतका कारणजो परमात्मा है तिस मों लीन भए ह्रपकों भावना करे कौं अधिष्ठान सत्ता विनाकार्य रूपी जगतकों आत्माते भिन्न नहीं जाने ऐसा आत्मविचार करणेहारे पुरुषके लक्षणकों कहते हैं सो पुरुष पूर्णकाम हो

जानाहै चिदानंद होइ रह
नाहै वाह्यदृश्य मान जगत
कों और अंतःकरणमों फुर
णेवाला जोजगतहै तिस
कों कछुभी नही जानताहै
क्यों उसकों सर्वत्रकेवल ब
लदाहि होतीहै ५७ ॥

पूर्वं समाधे रखिले विचिंतये दोंकार
मात्रं सचरा चरं जगत् तदेव वाच्यं प्र
णवोहि वाचको विभाव्यते ज्ञानवशा
न्नबोधतः ५८ ॥

अब समाधिकी सिद्धीते पू
र्व जो कछु करणोयोग्यहै
तिसकों कहतेहैं हेलक्ष्म
ण बलाकार अंतःकरण
की हत्तिकों समाधी कहते
हैं सो जबलग सिद्धनही

यो·
गी·
टी·
५९

59

भई तबलग संपूर्ण राचरच
विश्वकों ॐकारकीयां जो ती
न मात्राहैं अकार उकार म
कार तिनमों थ्यित भयेकों
जाने सो कैसें ॐकारकावा
च्य अर्थजगतहै औरप्रणव
जगतका वाचकहै नाममा
त्रहै यह ऐसी जोभावनाहै
सो अर्थज्ञानके उदयतें हो
तीहै आत्मबोधतें नहीं हो
तीहै अर्थ यहहै इसभाव
ना करकें स्वरूप ज्ञाननहीं
होताहै केवल इश्वरकी भा
वना निहत्तिहोतीहै जब
ब्रह्म साक्षात्कार होताहै तब
सर्व प्रकारकियां हत्तियां

लयकों प्राप्तहोतीसोहैं ४८

अकारसंज्ञः पुरुषोहि विश्वकोह्युकारकस्तै
जस ईर्य्यते क्रमात् प्राज्ञो मकारः परिपठ्य
तेऽखिलैः समाधिपूर्वं नतु तत्वतो भवेत्
४९ ॥

इसी अर्थकों प्रगट करकें क
हतेहैं हेलक्ष्मण जीवात्मा
परमात्मा जोहै सो जाग्रत स्व
प्न सुषुप्ति इन तीन अवस्थाओं
मों समष्टि व्यष्टि भेद करकें
तीन तीननामवाले होतेहैं
वाले होतेहैं जाग्रतकी व्यष्टी
करकें जीव विश्वनाम वाला
होताहै समष्टि करकें ईश्वर
सर्वविश्वके रूपवाला विरा
ट् नामहोताहै स्वप्नावस्थाके
लिंगशरीरकी व्यष्टिकरकें जी
व तैजसनामहोताहै सम

ग
गी॰
टी॰
९॰

ष्टिकरकें ईश्वर हिरण्य गर्भहो
ताहै सप्तमिकी व्यष्टी करकें
जीव प्राज्ञनाम वालाहोताहै
परमात्मा समष्टी करकें ईश्व
रही होताहै उसकाईश्वरही
नामहोताहै अब इनकों प्रण
वकी मात्राओंके अर्थकरकें कह
तेहैं अकारमात्राके नामके
अर्थवाला जीवजोहै सो वि
श्वरूपहोताहै सोजाग्रत
अवस्थाका अभिमानीहै ई
श्वर उस अवस्थाका साक्षी
जोहोताहै सोविराटकहीता
है ओर उकारमात्राके नामके
अर्थवाला जीवतैजस होता
है सोस्वप्नावस्थाके लिंगप्रा

रीरका अभिमानी होताहै और
ईश्वर उसका साक्षी जोहोताहै
सोहिरण्यगर्भनामवाला हो
ताहै और मकार मात्राके ना
मके अर्थवाला जीव प्राज्ञहो
ताहै सो सुषुप्तिअवस्थाका अ
भिमानी होताहै परमात्मा उ
सका साक्षीजोहोताहै सोईश्व
र नामवालाहोताहै समष्टीजो
होतीहै सेसृष्टि समूहकी हो
तीहै व्यष्टीजोहोतीहै सोभि
न्न भिन्न एकएककी होती
है समष्टीवाला ईश्वरहोता
है व्यष्टीवाला जीवहोताहै
यह अर्थ सर्ववेदोंकके स
र्वयोगी मुनीजनोंने पढेश्रा

इच्छाहै हेलछमन यहएसी
जोभावना होतीहै सोब्रह्मके
साक्षात्कारतें पूर्वहोतीहै औ
र ब्रह्मतत्वका साक्षात्कारभ
येते नहीहोतीहै क्यों नहीहो
तीहै सर्वप्रकारके विश्वका
ब्रह्ममों लयहोजाताहै ४९

विश्वंत्वकारं पुरुषं विलापये उकारमध्ये
बहुधा व्यवस्थितम् ततोमकारे प्रविला
प्य तैजसं द्वितीयवर्णं प्रणवस्य चांतिमे
५० ॥

अब इनविश्व पुरुषादिकों
के लयकरणेके प्रकारकों
कहतेहैं हेलक्ष्मण विश्वरू
पजो अकारहै तिसकों उका
रजोहै तैजस उसमों लयकों
प्राप्तकरै कैसाहै विश्वरूप

प्रकार जाग्रत अवस्थाका
अभिमानीहै स्थूलदेहकों
ही आत्मामानताहै बहुड
कैसाहै स्थूलदेहके संबंध
करके प्राप्तभये जोहैं नाना
प्रकारके स्थूलभोग तिनके
अभिमान करके आपभी ब
हुत प्रकारकके स्थितभया
है अर्थयहहै तिसके अर्थ
वालाजो अकारहै तिसको
लिंगदेहका सूक्ष्मशरीर
का अभिमानीजो तैजसहै
उकार तिसमों लीन करे
स्थूलदेहमों तथास्थूल भो
गोंमों कर्तत्व भोक्तृत्व बुद्धि
कों त्यागदेवे संपूर्ण स्थूल

ग.
गी.
टी.
६२

62

प्रपंचकों विश्वके ग्रर्थमों
लीनभयेकों जाने तिसकों
सूक्ष्म प्रपंचमों लिंग शरी
रके ग्रभिमानवाले तैजस
मों उकारमों लीन भयेकों
भावनाकरे इसके उपरंत
तिसकों उकार मात्राके ग्र
र्थवालेलिंग शरीरके ग्रभि
मान वाले पुरुषकों प्रण
वकी ग्रंतके मात्रामों मका
रमों लीन भयेकों भावना
करे इसके उपरंत तिसकों
उकारमात्राके ग्रर्थवालेलिं
गशरीरके ग्रभिमानवाले
पुरुषकों प्रणवकी ग्रंतकी
मात्रामों मकारमों लीनभ

येकों भावना करे मकारकै सोहै मशुप्ति अवस्थाके कारण शरीरका अभिमानीहै प्राज्ञनामवालाहै ५९ ॥

मकार मप्यात्मनि चिद्घने परे विलापयेत् प्राज्ञ मपीहकारणम् सोहं परंब्रह्मसदा विमुक्ति मद्विज्ञान दृङ्‌मुक्त उपाधि तो मलः ५९ ॥

तिस्के उपरंत तिस प्राज्ञरुपी मकारकों कारणशरीरके अभिमान वालेपुरुषकों शुद्धचैतन्य स्वरुप आत्मामों लीनभयेकों भावनाकरे तिस्के उपरंत आपने आत्माकों सर्वप्रपंचका लयहोनेके अधिष्टानकों परब्रह्मकों भावना करे सोकैसें अहंब्रह्म

ग॰ गी॰ टी॰ ८३

63

सोऽहं परमात्मा एसी भावना
करे कैसाहै सोपरे ब्रह्म सत्
शुद्धहै संसारके बंधननें रहि
तहै इसमें कोई आशंका क
रे जो अहं पदका अर्थ अहंका
रहै सो अहंकार रागद्वेषादिकों
करके मलिनहै उसको ब्रह्म
भावना कैसें बनतीहै इस
का उत्तर कहतेहैं जोंनसा
अहंपद ब्रह्मभावना सों हो
ताहै सोसंपूर्ण उपाधियोंने
रहित होताहै इसीनें निर्मल
हो जाताहै जिसको एसी
भावना होतीहै सोकेवल
ज्ञान दृष्टिवाला होताहै उसी
कों निदिध्यासन सिद्ध होता

है तत्वज्ञानमें परिपक्क नि
श्चयवालाहोताहै ५१ ॥

एवं परिज्ञात परात्म भावनः स्वानंद त
ष्टः परि विस्मृता खिलः श्रास्ते सनित्यात्म
सुख प्रकाशकः साक्षा द्विमुक्तो चलवा
रि सिंधुवत् ५२ ॥

अब इस प्रकारकी भावना
केलक्षणकों कहतेहैं हेलक्ष्म
ण इस प्रकारकी सदाभईहै
परमात्माकी भावना जिस
कों तिसकों धनपुत्र कुटं
बादिक संपूर्ण विस्मरण हो
जाताहै इसीनें केवल स्वरू
पा नंदककें सदा संतुष्टहो
ताहै इसकों विषयभोगोंकी
अभिलाषा नहींरहतीहै इसी
नें दृढवैराग्यवाला होता

ग
गी॰
टी॰
८४

64

है वह नर कैसा है सो ज्ञान मुक्त
होजाता है नामरूपादिक उपा
धीके भेदतें उसका स्वरूप रहि
त होजाता है इस प्रकारका
जीवन्मुक्त होजाता है इसमों
दृष्टांत कहते हैं जैसें तरंग
पवनतें रहित जलवाला स
मुद्र अचल होजाता है ऐसे
पुरुषकोंभी मेरे स्वरूपकी प्रा
प्ति होती है ५२ ॥

एवं सदाभ्यस्त समाधि योगिनो निवृत्त स
र्वेंद्रिय गोचरस्यहि विनिर्जिता शेषरिपो
रहं सदा दृश्यो भवेयं जितषड् गुणात्मनः
५३ ॥

हे लक्ष्मण इस प्रकारका स
दैव अभ्यास किया ब्रह्माका
र अखंड वृत्तिका समाधियो

गजिसनें एसे पुरुषकों में
प्रत्यक्ष दृष्टहोताहे सो केसा
हे पुरुष निवृत्त होगईहे इं
द्रियोंकी श्रो घ्राणादि विषयो
में वृत्तियां जिसकियां सो पु
रुष विषय वासनोंसे रहित
होजाताहे बहुड कैसाहे जी
तलियेहें कामक्रोधादिकसे
पूर्ण शत्रु जिसने इसींते जी
तलियेहें अपने वश किये
हे उत्तम गुण जिसनें सो उत्त
म गुण कौनहे तिनकों कह
तेहें सर्वज्ञता और नित्यतृप्त
ता और बोधका लोप नहींहो
ना सो अलुप्तबोधताहे और
स्वतंत्रता और अपने स्वरूप

ग.
गी.
टी.
६५

65

का विनाश नहीं होना और स्व
पने में अनंत शक्ति होजाती
है यह सर्व गुण उसको प्राप्त
होजाते हैं यह सभ ही इस प्र
कारके गुणों की प्राप्ति मेरी
भक्ति करके होती है मेरी भक्ति
विना नहीं होती है ५३ ॥

ध्यात्वैव मात्मान महर्निशं मुनिस्तिष्ठेत्स
दा मुक्त समस्त बंधनः प्रारब्ध मश्नन्न
भिमान वर्जितो मय्येव साक्षात् प्रवि
लीयते ततः ५४ ॥

इस प्रकारके लक्षणों वाला
पुरुष जो है सो आत्माके स्व
रूप को इस प्रकार ध्यान क
र्के सर्व प्रकारके कर्म बंध
नसें मुक्त होजाता है जीवन्मु
क्त होता है सो प्रारब्धके वश

भया हुआ और अभिमानतें
रहितहोइकर्के भोगोंकोंभी
भोगताहै तोभीमेरे स्वरूपमें
लीन होताहै अथवा मेरेरूप
वालाहोताहै मेरा उसका भे
दकछु नहींरहताहै ५४ ॥

आदौ च मध्येच तथैव चांतनो एवंविदित्वा
भयशोक कारणं हित्वासमस्तं विधिवाद
चोदितं भजेत्स्वमात्मान मथा खिलात्म
नाम् ५५ ॥

इसी अर्थकों प्रगट कहतेहैं
हेलक्ष्मण सर्वथमोंविषे व
हि धर्म श्रेष्ठहै कायह पुरु
ष जोहैसो इससंसारकों आ
दमें और अंतमें औरमध्यमें
भयका औरशोककाही केव
ल कारण जानकर्के तिस से

ग॰
गी॰
टी॰
५९

66

सारकीप्राप्तीका कारण जो
यज्ञ यागादिक कर्म है सोकै
साहै वेदवाक्योंकी विधी क
कै कया हुआ है तिसको सा
रेकों त्यागदेवे नित्यनैमित्ति
क काम्य कर्मों को सारेको त्या
गदेवे उसके उपरंत संपूर्ण
जीवोंका स्वरूप आत्मा जोपर
मेश्वरहै तिसको भक्तिकर्के
भजे ओर कछु नहीं करे ५५

आत्मत्व भेदेन विभावयन्निदं भवत्यभेदे
न मयात्मन स्तदा यथा जलं वारिनिधौ
यथापयः क्षीरे वियद्व्योम्न्य निले य
थानिलः ५९ ॥

सर्व भेदकों परित्याग कर्के
एकरूप जानकर्के परमेश्वर
कों जोभजताहै सोनामरूप

के भेदसें रहित भया हुआ के
वल मेरा रूपहोजाताहै अब
इसी अर्थकों कहतेहैं हेलक्ष्म
ण जो पुरुष संपूर्ण विश्वके
कारणका अधिष्ठान भूत मेरे
स्वरूप विषे अपने आत्माकों
जीवकों तथा इस विश्वकों
अभेद भावनाकों करताहै
और एक रूपताकी भावना
कों करताहै सोमेरेस्वरूप
मों एक रूपहोजाताहै उस
काभेद कछुनहीं रहताहै
इहां दृष्टांतभी कहतेहैं जै
सें समुद्रमों प्राप्तभया जो
नदीओंका जलहै सो अपनी
नदीके नामकों त्यागकरिके

समुद्रके जलमें एकरूप हो
जाताहै और जैसी घटकीम
सकका पवनजोहै सोबा
हिरके पवनमें एकरूपहो
जाताहै तैसे वह पुरुष मेरे
में एकरूप होजाताहै ५८

इत्थं यदीक्षते तद्धि लोक संस्थितो जगत् म
येवेति विभावयन् मुनिः निराकृत त्वा
त् कृति शुक्ति मानतो यथेन्दु भेदो दिशि
दिग्भ्रमादयः ५७ ॥

हे लक्ष्मण इस प्रकारकर्के
आत्मतत्व कोजानने हारा जो
पुरुषहै तिसको जगतकी
सत्यताका भ्रमजोहै सो आप
ही निवृत्त होजाताहै इसी
अर्थको कहतेहैं सो जो आ
त्म तत्वको जाननेहारा पुरु

रहै सो इसी भूलोकमों वर्त
मानहै तोभी जीवन्मुक्तिद
शाकों प्राप्तभयाहै और अप
नी प्रारब्धके वशातें लोक
व्यवहारकों करताभीहै तो
भी इस जगतकों मिथ्याही
भावना करताहै सोजब आ
त्मतत्वकों प्रत्यक्षतासें जान
लेवे तबही उसकों सत्यता
का भ्रम निवृत्तहो जाताहै
इसमों क्या कारणहै सोही
कहतेहैं उसपुरुषनें श्रुति
योंके विचारतें औरयुक्तियों
के प्रमाणकेवलतें जगत
की सत्यताकों निवृत्त कर
दियाहै कैसें युक्तिमों रज
जैसें

रा.
गी.
टी.
८८

68

नका भ्रमजो होताहै सो शुक्ति
जानने करकै निवृत्त होजाता
है यह रज तनहीहै शुक्तिहै
यह जगत सत्य नहींहै ब्रह्म
ही सत्यहै इसमों दृष्टांत कह
तेहैं जैसें किसी पुरुषको प
कचंद्रमा मों दोचंद्रमाकाभ्रम
भया सोवास्तव एकचंद्रमाको
जाननेकरकै निवृत्तहोजाता
है औरकिसी पुरुषको पूर्व
दिशामों पश्चिमदिशाका भ्र
मभया उसने जबपूर्वदिशा
को जान्या तब उसका भ्रम
निवृत्तहोताहै आदिपदकरकै
दूरसें किसीने ठूंठ दृष्ट कि
या उसको पुरुषका भ्रम भ

या यह प्रपंचहै जबनिक
ट भयातब प्रपंचका भ्रम
उसको निवृत्त भया तैसेही
तत्वज्ञानकरकें जगतको स
त्यताका भ्रमनिवृत्त होजा
ताहै ५७ ॥

यावन्न पश्ये दखिलं मदात्मकं तावन्म
दाराधन तत्परो भवेत् श्रद्धालुरस्पूर्जि
त भक्ति लक्षणो यस्तस्य दृश्योह मह
र्निशं हृदि ५८ ॥

ऐसे ज्ञानमों मेरी आराधना
ही उपायहै ऐसी भक्ति करकें
एक इस अर्थको कहतेहैं
हेलक्ष्मण यह प्रपंच इस
जगतको मेरी सत्ता करकें
एक मेरा स्वरूप करकें जब
लग नहीजाने तवलग म

भ. गी. टी. ८६

गवानजीकी आराधनाही मोक्षका उपायहै ऐसीभक्ति करकै युक्तहोइककै मेरी आराधनामों तत्परहोवे कैसा है अतिशायककै उदितभये हैं भक्तिके लक्षण जिसकों इसप्रकार करकै भक्तिकरकै युक्तभया जो पुरुषहै उसके ह्रदयमों मैं प्रत्यक्ष ध्यानगोचर होताहै जिस प्रकारकरकै जो पुरुष जैसी आराधना करे तैसेही तिस पुरुषकों मैं भी भजताहूं ५८।

रहस्य मेतत् क्षति सार संग्रहं मयावि निश्चित्य तवोदितं प्रियात् यस्त्वेतदालोचयतीह बुद्धिमान्समुच्यते पातकराशिभिः क्षणात् ५९ ॥

69

अपने सूत्रमें कहा जो वच
नोंका समूहहै तिसको वेद
वाक्यके समान सेवन कर
ने हैं और तिसका विचारजो
करणा तिसको अपने आरा
धनामों विघ्नकरणेहारे जो
पापकर्म हैं तिनके विनाश
का उपाय रूपकहतेहैं हेल
क्ष्मण यहज्ञान जोहै सोमैने
तेरेप्रति संपूर्ण वेदोंकीश्रु
तियोंके अर्थको संग्रह करके
सार कहाहै यह अत्यंतगो
प्यहै मैनेतेरे प्रियकरके प्रे
मकरके कहाहै और किसे
प्रति कहनेयोग्यनहीहै य
ह परम श्रेष्ठ प्रमाणवाला

रा
गी.
टी.
७.

70

है और महा शुद्ध है सो किसे
जिसकारणतें जो पुरुष इस
को विचारण करता है सो
महाबुद्धिवाला होता है और
संपूर्ण पापोंके समूहोंते त
णमात्रतें मुक्त होजाता है ५५

प्रातर्यदीदं परि दृश्यते जगन्मायैव स
र्वं परिहृत्य चेतसा मद्भावना भावित
शुद्धमानसः सुखी भवानंदमयो निरा
मयः ६ ॥

अब अपने शुभविवेककें पूर्वक
ता जो उत्तम अर्थ है इसकी
दृढतावास्ते लक्ष्मणको उप
देश करते हैं हे भाई हे लक्ष्म
ण जो कछु यह चराचर जड
चैतन्य स्थूलसूक्ष्म जगत दृ
ष्ट आवता है सो संपूर्ण मा

याहीहै इसप्रकार करके तू
अपने चित्तको इस जगततें
उदासीनकरके और मेरेस्वरूप
की भावना करके दृढभावना
वाला और शुद्धभयाहै मन
जिसका ऐसा तू सर्वविका
रोंते रहितहो जावेगा और स
दासुखी होजावेगा और केव
ल आनंद रूपहोवेगा पहि
लेभीतू आनंदरूपहै तोभी
जैसे कोई पुरुष अपनेकंठ
के भूषणको आपही भूल
जाताहै बहुत व्याकुलताको
प्राप्तहोइ करके जबस्मृतिको
प्राप्तहोताहै तब अपने कंठ
मेंही पाई करके आनंदमय

होताहै तैसेंतूं भी ज्ञानेमय होवेगा ८ ॥

यः सेवते मास गुणं गुणात्परं ह्यदाकदा वा यदिवा गुणात्मकम् सोहं स्वपादो चिन रेणुभिःस्पृशन् पुनाति लोक त्रितयं यथा रविः ८१ ॥

इसरीतनकर्के अपनी उपासना करणेहारा संपूर्ण लोक कों पवित्रकरताहै इस अर्थ कों रामजी कहतेहैं जो पुरुष मेरेकों अपने चित्त कर्के सेवनकर्ताहै कैसाहूं मैं निर्गुणहूं औरसर्व गुणोंते परे हूं सचिदानंद स्वरूपहूं और मायाते रहितहूं अथवा सगुणकों उपासना करताहै सगुण कैसाहूं सर्वज्ञतादि

गुणों करके परिपूर्ण है ऐ
सेकों जब पुरुष सेवन क
रता है सो पुरुष साक्षात् मैं
ही हूं उह पुरुष मेरा प्यारा
है मद्रूप है इसीनें अपने
चरणोंकी रजकरके सर्वलो
ककों पवित्रकरता है कैसे
सूर्यभगवान् अपनी किर
णोंकरकेसर्वलोकोंको प
वित्र करता है ८१ ॥

विज्ञान मेतदखिलं श्रुतिसारमेकं वेदा
न्त वेद्यचरणेन मयैव गीतम् यः श्रद्ध
या परि पठेद्गुरु भक्तियुक्तो मद्रूप मेति
यदि मद्वचनेषु भक्तिः ८२ ॥

अब जो पुरुष इस ग्रंथको
अर्थकरके विचारणेसों स
मर्थ नहीं होवे उसको के

वल पाठकरणे करके भी म
हाफलहोताहै इस ग्रंथको
कहतेहैं हेलक्ष्मण यहमैं
ने तेरे प्रति संपूर्ण श्रुतियों
का संक्षेप करके सार ग्रंथक
ह्याहै कैसाहै आत्मज्ञानको
करणे हारा है मैं कैसाहूं सं
पूर्ण वेदोंकरके वेदांत शास्त्रों
करके जाननेयोग्यहूं चरण
जिसके अथवा जगतके उ
त्पत्ति प्रलयादिक कर्म जि
सका ऐसाजोमैंहूं तिसने
कह्याहै इसको जो बुद्धिवा
न् विचारवान् पुरुष विचा
रकरताहै अथवा पढ़ताहै
अथवा श्रवणकरताहै सो

मेरे स्वरूपकों अथवा मेरे
लोककों वैकुंठमों प्राप्त हो
ताहै इसमों क्या कारणहै
जो पुरुष मेरेवचनमों प्र
तीति करताहै भक्तिकके
निश्चयजो करताहै सो अव
श्यमेव महाफलकों प्राप्त
होताहै ॥ इतिश्रीमदध्यात्म
रामायणे उत्तरकांडे उमाम
हेश्वर संवादे श्रीरामगीता
या अर्थबोधः समाप्त ॥

श्री रामायनमः श्रीमहादे
वजी पार्वतीके प्रति राम
गीताको सुनावते भये ति
सका महात्म ब्रह्माजी ना
रद मुनीके प्रति सुनावते
है हे नारद रामगीताके सं
पूर्ण महात्मको शिवजी जा
नते हैं तिसते आधे महात्मको
पार्वती जानती है तिसते आ
धे महात्मको मैं जानता हूं
१ तिस रामगीताके महात्म
को किंचित्मात्र मैं तेरेको
सुनावता हूं संपूर्ण कहने
की मेरेको सामर्थ नहीं है
जिसको जानकर्के प्रकट
जो है सो हत्यामात्रते चित

रा॰
गी॰
म॰
७४

की शुद्धिकों प्राप्तहोताहै
उसकाअंतःकरण शुद्धहो
ताहै मनकरके कियेहुए पा
पनाशकों प्राप्तहोतेहैं ता
रद जिसपापकों रामगीता
नाशनहींकरसकतीहै सो
पाप इसपृथिवीमों किसीती
र्थव्रतादिकोंके सेवनेमों क
हींभी नष्टनहींहोताहै अर्थ
यहहै रामगीता संपूर्ण पा
पोंकेनाशकोंकरतीहै इस
प्रयोजनकोंमैंवारंवार वि
चारणकरताहूं सोक्याहै
जोपापरामगीताकरके न
हीनिहतहोवे सोपापकेसे
निहतहोवे तिसकोंमैं नहीं

जानताहै इसनेयह सिद्ध
भया रामगीताकरकै सर्व
पापोंका क्षयहोताहै यहरा
मगीताजोहै सो श्रीरामजी
ने संपूर्ण ब्रह्मविद्या किंवा
उपनिषदोंके समूहकों म
थनकरकै मथनकीन्याई सा
रभूत रामगीता रूपी अमृ
त लक्ष्मणके प्रति महाप्रे
मकरकै अर्पणकरीहै तिस
कों जो पुरुष पानकरताहै
सो अमरहोजाताहै जन्मम
रणादिक क्लेशकों देवने
हारे संसारके बंधनते मु
क्तहोजाताहै हेनारद इस
की एककथा तेरप्रतिक

रा॰
गी॰
म॰
७५

75

हतेहै राजाकार्तवीर्य जोहै
सो हजारभुजावालाहोताभ
या सोबडा बलवानहोताभ
या अपनेराजमद करके म
स्तहोता भया सोसिकारखे
लनेको बनमो जाताभया
सोजमदग्निमुनीके आश्रम
मो जाताभया उसका जम
दग्निमुनी आदरसत्कार क
रताभया औरभोजनकेनि
मित्त राजाको निमंत्रण क
रताभया कामधेनकेप्रसा
दते राजाको औरराजाकी
सेनाको इच्छाभोजन करके
त्रप्तकरताभया उसकोसि
द्धीकोदेषकरके राजाजम

दग्नि मुनीनें कामधेनकों
मांगताभया जबजमदग्नि
मुनीनें कामधेनु राजाकों
नहींदीनी तब राजा अपने
बलकर्के मुनीनेकामधेनु
कों लेजाताभया औरजमद
ग्नि मुनीकोंमारजाताभया
उसमुनीकापुत्र परसुराम
होताभया उसनेपिताके
मारणेकी जबखबरपाई
तबक्रोधकर्के आपने पिता
के मारणेका बदलाकरणे
को राजाके मारणवास्ते के
लासमों शिवजीकी आरा
धनाकरताभया तहांपार्व
तीसर्वदाही रामगीताकों

रा॰
गी॰
म॰
२८

नियमकरके नित्यप्रतिपाठ
करनीथी उसकोंसुनकर्कें
परशुरामभीपाठकरनाभ
या सोपरशुरामभी श्रीविष्णु
भगवानजीकी अंशकला
कर्के अपनेमों वैष्णवतेज
कों पावनभया उसीतेजके
बलकर्कें परशुराम उसरा
जाकों मारनाभया बहुरइ
कीसवार निःक्षत्रिया पृथि
वीकोंकरनाभया सोरामगी
ताकाप्रभावहै सोरामजीका
समागमकोंपाइकर्कें उस
तेजकों रामजीकेस्वरूपमों
प्रवेशकरनाभया ५ हेनार
द जोकोई पुरुषब्रह्महत्या

दिक पापोंके नाशकों चा
हताहै सोपुरुष एकमास
भर रामगीताको नियमक
कें पाठकरेतो संपूर्ण पापों
तेशुद्धहोजाताहै ८ हेनार
द महाभारीकुदानजोग्रहण
करणाहै औरमहाअभक्ष्यअ
न्नकों जोभक्षणकरणाहै
औरमहाअवाच्यवचनजोक
हताहै उसतेजोपापहोता
है सोसभहीपापरामगीता
केपाठमात्रते निवृत्तहोजा
ताहै उसकों रामगीतानष्ट
करदेतीहै ७ हेनारद जो
पुरुषरामगीताकों सालि
ग्रामशिलाकेनिकटपढे

रा॰
गी॰
म॰
३३

77

औरतलसीकेनिकटपढ़े
औरपिपलवृक्षकेनिकटप
ढ़ेउसकोंऐसामहात्मफ
लहोताहै जोवानीकेगोचर
नहीहै अथवायतीजोपर
महंसहैं तिनकेनिकटपढ़
उसकोंकिसीनेकहानहीजा
ताहै ८ जो पुरुष श्राद्धकेस
मयमेंरामगीताकोंपढ़ता
हूआब्राह्मणोंकोंपितरोंके
निमित्तभोजनकरावे उसके
पितरविष्णुलोककोंप्राप्तहो
तेहैं ९ जोपुरुषएकादशी
केदिननिराहारव्रतकरकें अ
गस्तवृक्षकेतलेरामगीता
कोंपाठकरेसोपुरुषमाता

तरामरूपहोताहै सर्वदेवता
ककैंपूजनीयहोताहै इसकी
पूजाकर्कैसर्वदेवताकीपूजा
काफलहोताहै ९ हेनारद इ
सरामगीताकेपाठकरणेकर्कै
जोमहाफलहोताहै सोमहा
फलदानकरणेविनाहीहोता
है औरध्यानकरणेविनाभीहो
ताहै औरतीर्थस्नानविनाही
प्रतेनफलहोताहै ११ हेनारद
बहुतकहनेकर्कैक्याप्रयोजनहै
हेमावधानहोइकर श्रवण
कर जेतेवेदशास्त्रधर्मशास्त्र
पुराणइतिहासादिकमहाप
वित्रशास्त्रसमूहहैं सोसभ
हीरामगीताकी एककला

रा॰ मात्रके समान नहीं होते हैं ९
गी॰ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे
म॰ बालकांडे श्रारंभे रामगीतामा
७८ हात्म्यं संपूर्णम् ॥ शुभम् ।

७८

